

इहर्गनियनिष्ठाधनमलुनवाय॥
मृक्षानवकमस्थवृ धर्मवर्कमृदा॥

युध्वं वज्र॥

दक्षिणं नल॥

यष्टिमं यम॥

उरुनं विष्टवज्र॥

अमं वज्रमा॥

नेमथं ध्वज॥

वायथं स्वज॥

ॐ नमो नं वज्र॥

वजावलि वरिन्वा॥

वाक्क वरुनमविदिगा॥

अमं यथं राऊन॥

नेमथं जायमाला॥

वायथं गीता॥

ॐ नमो नं यथामाला॥

वाक्क वाधिसत्त्वविक्ता॥

ॐ नमो नं विष्टवज्र॥

ॐ नमो नं वज्रं यमं

अं नमो नं गजा

अम्यादि दक्षिणं॥

यथामाला ॐ नमो

स्वजं यथायनिनलं ध्वजं

नेमथ्यादि यष्टिमं॥

दीयं कृष्ण यथायनि वज्रं

यथायनि नलं नकां

वायथादि उरुनं॥

ध्वजं दक्षिणं उत्थनं

कृष्ण यथायनि नलं

अं नमो नं कदा

वाक्क निष्ठा कलसं॥

युध्वं अं नमो नं॥

दक्षिणं याता॥

यष्टिमं दयता॥

उरुनं यष्टं॥

यथं नकास्वजं॥

युनादि यथावलि

वजावलि जालं

युध्वं वज्रं॥

दक्षिणं यमदण्डं॥

यष्टिमं नागा॥

उरुनं कलसि॥

अमं सुनायागं॥

नेमथं स्वजं॥

वायथं ध्वजं॥

ॐ नमो नं विष्टवज्रं॥

कालाननाकं कं॥

ॐ नमो नं सत्त्व इति

यनि ॐ नमो नं मलुन

लिखितं॥ ० ॥

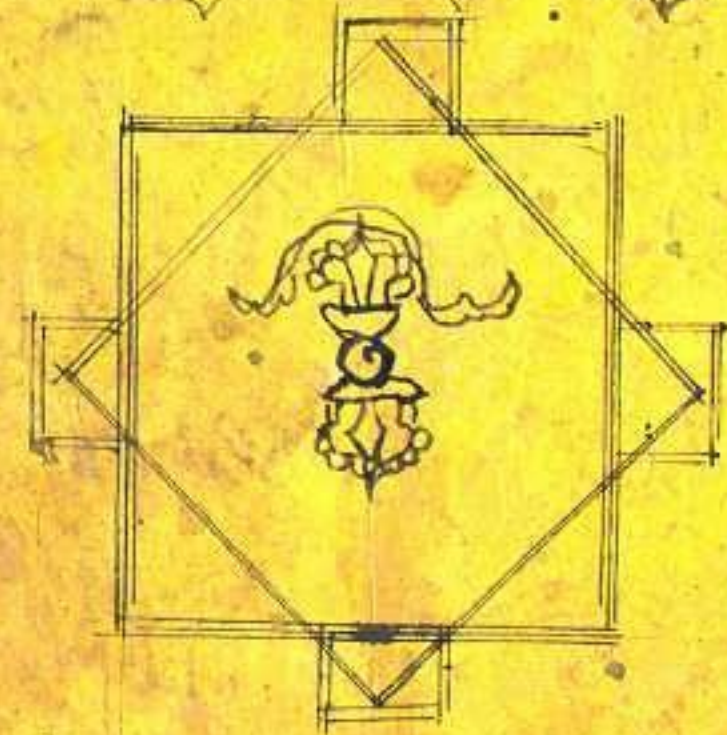
ॐ नमः श्रीवज्रसत्वाय ॥ राजा कर्मविधिमाह ॥ आदौ सर्वं मगदिदिवलिथयनयाय ॥ ७ आय ॥ गुनमधुल ॥ यंच
गर्वसाधन ॥ सिधयक ॥ मधुलथक ॥ किरनक ॥ गिसमाधियाय ॥ कृष्णसर्वं मगविद्विलैयूजा ॥ यधर्मा अकालमूव
क्रियवदक्षणा ॥ यवयूजा ॥ सैनीतना धूय ॥ स्नात ॥ विधिथंयूजा ॥ यधर्मायादि ॥ यधनदिदिवलिविय ॥ यनमूवातामनिक
५ लस्वसदय ॥ स्वस्तिकसगय ॥ गुनमधुलदनक ॥ नयदयूगियूजायाक ॥ मधुलविसरून ॥ यननिष्यरुवना ॥ ॥ १
ॐ नमः शिवाय ॥ मानं रावय ॥ रावनास्वां दूतक ॥ यच्छगायविय ॥ ॥ रागाक्षयसर्वगथागगसुगदंनूयं सर्वधाधिसल
नूयं मधुलाथेयनिवृत्तं ॥ मधुलाधियकिजानाक ॥ ॥ पाद्यादिजावमन ॥ यंचयुहायूजा ॥ ॥ यनकिम्व ॥ स्वांजाठाडाहा
ऊलपाडाधान्य ॥ ॥ ॐ सर्वगथागगसुवलिगविलासिगमिगनमामिरगावकजः ॥ हं वं हं ॥ यतिरुक्कसुमाञ्जलिनाथक्षः

समयसत्वं ३॥ हल्य ॥ ॥ आचार्यन. वज. घञ्. थानाडा ॥ धूययाया ॥ वारुतावन अमकं यगिषायवः ॥ गत्तरकस्य रगवन्
यज्ञादकुरुमदसिः ॥ कथादि सर्ववृद्धाश्च कुरियत संयतिष्ठितः ॥ नायादवा ऊथा कृक्षा गदमि स्तुदि सा कगा अर्द्धस्वसगणं नाः
थरुत्वा यूथादिका ॥ मान् गतान् अमूकस्यार्थयवाधिसत्त्वप्रविधय. समन्वाहव रुमां वृद्धा ऊगावका क्रियार्थदाह दस्तुः
वाधिसत्त्वा ॥ जावान्या मरुदवगा ॥ दवगाला कपाला ॥ धरुगा संवाधिसासिगा. क्षासना रिनगा सत्ताथकविथा ऊवज्ञ
॥ अमूका हंमहावजिषा विधि संयुगाः ॥ कविषामि ऊगासृद्धं ॥ ऊथा ग ह्यप्रवावगा ॥ अमूकया मूयादाय. संहिषास्यवग
मः सर्वस्याम्यगिषायसानिधकुरुमदर्थः ३॥ ॥ वज. तावा. मगरुंताया ॥ सूक्ष्मादिगाया विय ॥ मूवाया क. अ. द. ग. ॥
सपत्नविकनं निष्कसविनक ॥ ॥ ययूयाग विय ॥ दिगाताया ॥ खरिवाक्यनयं घञ्. थ. स्यां ॥ मिद्ववग विय ॥ ॥ वा

[illegible]

सर्वन	कल	मट
अक्रिं	कसुज	यिना
सिफिं	नकसुज	गिसासु

दिदिव७



मट अविंकुमरुजाः ना सिफिं नकसुजा गिसासु ॥ वासुयार्धवागुमलु ॥ यं
 वरावाहनाधनरासिधनयामलु लथिका ॥ लंखवल्लिछाय ॥ सनाधिवाकृष्णसंगंमक
 सिफिं छायरलुकुमालिरुजामयास्यनय ॥ दवयूजा ॥ वाज्याधूनिगावामग
 नकसुजाविधिध्वंयूजा ॥ रंकायविधिध्वंयूजा ॥ अधर्मादिकियूव ॥ नयगव
 जायूजा ॥ अधर्मादिकियूव ॥ वाधनजकयानामलखस्यदकाय ॥ सखिकसकय ॥
 गुनमलुलदनक ॥ मकयूजायाका ॥ सनाधवा ॥ विसर्जनयाका ॥ वाधनशावनास्वा
 नय ॥ गणछिष्यमात्मानंशावयत् ॥ वानिनांजन ॥ गार्थविकंमकरंलय ॥ कृष्णसं
 ह्वनस्नानयाका ॥ ॥ उं ह्रीं वज्रवदवयदसवज्रयानिसमूर्तिगावसहितस्य ॥

माघसिद्धिजलसंगलंदिगकलंयनमार्थसिद्धिजलसंगलंरुवकुष्मान्तिकवकवायना वाधनकाद्रवसुविद्याडंआःदिवा
 समेखादावाडंआःवाधनगदधकवचवसुखादावा वाधनडावगगसिद्धवसुधलकसिसाहवगस्यंतका वाडंसर्वगथा
 तद्वृगमधूयानंखादावा दूद्वंका वाडंसर्वगथागगविनामृगधनखादावा नासिक वाडंजीःखादावा वासिचिंदिगत्वस्य।स्व
 रुक्मिवायनयंघष्ठथास्यंविथका वाडंजंखादावा अधिष्ठान वाडंसर्वसंक्षाधविद्रंरुट् ॥ नकानक वाडंआःगगसमाधिरुलसः ३
 वंजिनयूयननखादावा ममसिआदिनकरावयाक वाडंसमाधिरुलद्रंखादावा नासिक वाडंजीःखादावा ३ वाहंत्वलंस्वनसाय
 नखाद्विकनंमसवृंका वाडंसर्वगथागगकायवि(क्षाधनवजुतिलकरुषनखादावा ॥ नामद्वय वाडंआःजम्
 कवजोरुवगथागगनामरुर्वस्वः ॥ यंवगन्धनगिवक वाडंआःगिवकरुषनखादावा ययरुनगिसानकियक ॥ जावाकाव ॥

दिगन्तस्य स्वस्तिवाक्ये दयं च धृष्ट्या स्याद्विय ॥ उं सर्वो रत्नहारुषा (ह) स्वाहा ॥ का स्वायक ॥ ॥ धनद वरुणा आगं वा द्य
यक ॥ मूत्राया हाननं करुणा ध्यायनायाय ॥ अविधानमरुः ॥ ॥ उं नमः समन्तवृद्धाना सर्वमथागानां डाजावलं दय
स्वाहा ॥ धाव ॥ ॥ आगं द्यस्यं नक ॥ चलानि स्यं धनसा दवलनि स्यन्नक ॥ प्राणाय स्वाहा ॥ चालां ॥ अया धाय स्वाहा ॥ अंगुलीं ॥
समानाय स्वाहा ॥ दधूलां ॥ उं उदनाय स्वाहा ॥ चालां ॥ उं वाताय स्वाहा ॥ कालां ॥ उं दिव्याय समाधिष्ठानं जिनपूरुषं न स्वाहा
॥ षोडशविननं काय जिहिकायानक ॥ नासिक ॥ उं जीः स्वाहा ॥ कलशाय ॥ वयूक ॥ नासना विय ॥ संद्वल द्यं दायक ॥ उं
सर्वमथागतकाय विहानधन स्वाहा ॥ धनन स्वास्वां मालानका स्वायक ॥ वरुण धृष्ट्या स्यं स्वस्तिवाक्ये स्यान्मालां का स्वायः
क ॥ उं वंजसूगन्ध पूष्यमाल स्वाहा ॥ सर्गा वियक ॥ सिंह लूय ॥ यधर्मा ॥ वजन अविष्ठान याय वाक ॥ उं आः सूप किस्ति व वज

[illegible]

[illegible]

वसज्जुदडमलनय॥ज्जुदडमलसग्वश्यालत्रिस्सज्जुदडमकयतांविक्का॥स्वस्तिवाक्कयदयंदिगत्वस्यंस्वच्छलिविवा
 विय॥लाहमासमासकलक॥थननोयाकदाथयूजा॥नूसिधनक॥ज्जुवदामलनसमान॥क्कलंलंवननानकयाया
 थससंगय॥यश्चरायविय॥वज्जनवसयावथिसंअधिकां॥ ॥५॥अःसूयगिष्ठवज्जसादा॥ ॥ज्जानाविय॥ज्जं
 कांकात्वायक॥ ॥५॥अःधर्मादी॥ल्यदूहादूविय॥५॥वज्जसादलं॥वानाकमान॥स्वस्तिवाक्कयदयंदिगत्वस्यंविय ५
 ॥हासिठुतांविय॥५॥वज्जनलतां॥ ॥५॥दसानकवज्जय॥गंकलज्जय॥५॥सर्वतथागतावृक्षागयामि॥यदिगत्वस्यंवानां
 हानारुसयाय॥यिह्वाल्लवसवस्संदगवानादय॥ ॥५॥यायाथसंगय॥वानाकमांल्यदूहादूलिकाय॥सिद्धं
 य॥ ॥कोमात्रियूजायाय॥मधुलथिल॥आहिवाद॥सर्वंमदनिकय॥दंशदकक्षा॥कोमात्रियूजाज्जय॥ ॥समा

याचका ॥ ॥ धोसर्वं स्वसंगं विय ॥ गुणचका ॥ कलशय ॥ मूलसूत्र ॥ ॥ ॐ निमलवत्तनविधि ॥ ॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ नमः नत्तु याय ॥ ॥ ॐ प्रकियत्रि (ॐ धनमाधुलायूजाविधिमाह ॥ ॥ वाङ्मय ॥ विद्मधमेवकमूडा ॥ मधुल
 यादथसमसदडानकलसकय ॥ ॥ कलसर्वं मक वडरुडा जूस्ति स्वयकया दडानसिजसनाड लडादायन यंचन
 त्रकयाडा जूस्ति दाक्कायवमानदिन ॥ ॥ ॐ याय गुनमधुल यंचगव्य (ॐ धन ॥ सिधकय ॥ मधुलथिल ॥ स्वा
 गन्किगनविसङ्गना ॥ सिममाधि ॥ ॐ सखं मग थायिंयूजा ॥ दवयूजा ॥ ॐ या धूनि यूयं लाघष्टुगुति ॥ ॥ ॐ
 थमधुल यूजा ॥ रावनास्वागय ॥ ॥ गतामधुलमधुल ॥ ॐ मनि यूव्ववजयादि ददि (ॐ वजास्ति यच्चिमसंयचक
 वरि ॥ ॐ वविजाष्टुय ॥ ॐ गतामधुलमधुल ॥ ॐ मनि यूव्ववजयादि ददि (ॐ वजास्ति यच्चिमसंयचक
 वरि ॥ ॐ वविजाष्टुय ॥ ॐ गतामधुलमधुल ॥ ॐ मनि यूव्ववजयादि ददि (ॐ वजास्ति यच्चिमसंयचक

नवजांकक्षादिका (ह) षू धूयादिदवगा एतसमयसत्त्वज्ञानसत्त्वावादनं हूंकमूदामरुनयूजाकवयत् ॥ १ ॥
आयाधुनि यूर्यलौघं मुक्तिवजगा वामगरुत्तय ॥ विविधं यूजा ॥ • ॥ यूर्यनास ॥ • ॥ उँ हं क मूनयद्रुँ स्वादा
उँ वजया हयद्रुँ स्वादा ॥ उँ वजा ह्री यद्रुँ स्वादा ॥ उँ हं य वज वरु यद्रुँ स्वादा ॥ उँ विज था ह्री यद्रुँ स्वादा ॥ उँ वं जानानि
नद्रुँ रुट ॥ उँ वज विन्धसिनद्रुँ रुट ॥ उँ वज विकिनी नद्रुँ रुट ॥ उँ ह्री नागयद्रुँ रुट ॥ • ॥ उँ वज नाह्यद्रुँ ॥ उँ वज ७
मालगा ॥ उँ वज गी गद्गी ॥ उँ वज नृत्तजः ॥ २ ॥ उँ मैगी यरु न ह्याय स्वादा ॥ उँ जू माघ दह्री न स्वादा ॥ उँ
सर्वपायजदसर्वायाय वि (ह) धन स्वादा ॥ उँ सर्व (ह) कट मादि घात मगद्रुँ ॥ उँ गं न्द हस्ति नद्रुँ ॥ उँ सू वंगम
द्रुँ ॥ उँ गं गह गं जद्रुँ ॥ उँ हान कयुद्रुँ ॥ ३ ॥ उँ जू मृग यरुद्रुँ ॥ उँ वज यरुद्रुँ ॥ उँ रुदयानद्रुँ ॥ उँ हान वहीय

रुद्रं ॥ ४ ॥ उँ वज्र गरुडं ॥ उँ अक्षय मणि रुद्रं ॥ उँ युगि शानकरुद्रं ॥ से उँ मकर रुद्रं ॥ ५ ॥ उँ वज्र युध रुद्रं ॥ उँ व
ज्र धूय रुद्रं ॥ उँ वज्र वलाकि रुद्रं ॥ गन्धर्व रुद्रं ॥ ६ ॥ ॥ अथ धर्मादि ॥ ॥ विष्णु मधुल वृजा ॥ ७ ॥ अथ अरुणा
वन ॥ ॥ का. यत्का. शायमा. गाय. अक्षय. दा. हा. खां. का. सां. गा. दन. या. य. ॥ मरु ॥ उँ वज्र मूनय रुद्रं ॥ ८ ॥ ॥ अथ १०
६ ॥ ॥ दिवंग रुद्रं ॥ मूकस्य नाम धर्म उँ सर्व या य रुद्रं ॥ १ ॥ उँ सर्व या य रुद्रं ॥ विष्णु धन रुद्रं ॥ उँ वज्र रुद्रं
॥ २ ॥ ॥ उँ ॥ सर्व क मो वन धार सिं क रुद्रं ॥ ३ ॥ उँ ॥ विष्णु धन रुद्रं ॥ ना. स. या. व. न. धा. नि. रुद्रं ॥ ४ ॥ उँ ॥ विष्णु धन
या. व. न. धा. नि. रुद्रं ॥ ५ ॥ उँ ॥ उ. व. श. ध. क. रुद्रं ॥ ६ ॥ उँ ॥ स. न. श. य. स. न. आ. व. न. धा. नि. रुद्रं ॥ ७ ॥ उँ ॥ ग. ट.
॥ स. व. व. न. धा. नि. रुद्रं ॥ ८ ॥ उँ ॥ रुद्रं ॥ स. व. व. न. धा. नि. रुद्रं ॥ ९ ॥ उँ ॥ रुद्रं ॥ स. व. व. न. धा. नि. रुद्रं ॥ १० ॥ उँ ॥ रुद्रं ॥ स. व. व. न. धा. नि.

हंरुद्रा उंष्टि २४ सर्वो व नक्षानि हंरुद्र ॥ उं दं २४ सर्वे न व क ग कि हंरुद्र ॥ उं यं २४ सर्वे य ग ग कि हंरुद्र
द्रा उं मथ २४ सर्वे कि र्थे ग कि हंरुद्र ॥ उं ४४ सर्वे या य वि (क्षा धनि ह्ना ला व ला कि नि हंरुद्र ॥ उं ४४ सर्वे या य ग कि वं ध
ना स नी हंरुद्र ॥ उं ४४ सर्वे या य वि (क्षा धनि धन २ धू य य २ हंरुद्र ॥ उं ४४ सर्वे दू र्ग कि वि (क्षा धनि यू य वि ला कि नी थ हंरुद्र ॥
उं ४४ सर्वे या य वि (क्षा धनि ह्ना ना व ला कि नि हंरुद्र ॥ उं ४४ सर्वे या य ग कि वं ध ना स नि य हंरुद्र ॥ उं ४४ सर्वे न व का य ग ला ॥
क षे हि हंरुद्र ॥ उं ४४ सर्वे या य ग कि ग द न वि क्षा स नि हंरुद्र ॥ ॥ ७ ॥ कृ ण लं छ क य ॥ ॥ उं न मा
४४ उं ४४ सर्वे न व का दू क्षा व हि हंरुद्र ॥ उं ४४ सर्वे या य वं ध ना ह न वि (क्षा धनि हंरुद्र ॥ ४४ र ग व र्थे सर्वे दू र्ग कि य वि (क्षा धन ना
जा य ग थ ग ना या र्क सं म्य क्त्वं द्रा य ग थ ॥ उं (क्षा धन २ वि (क्षा धन २ सर्वे या य वि षु षु वि षु षु सर्वे क म्म वि षु

क्त्वादा ॥ ५५ ॥ उक्ते कानि श्रमावति श्रमावति श्रयति हत हत २ सर्वकर्म यन् यन् वाहि ॥ स्वधार्द्र ॥ धोयं वा ॥ ५६ ॥
 अमाघां यति हत हत २ सर्वो वनन विहासति हत २ ॥ आवन हतति हत ॥ यं वगश्च ॥ ५७ ॥ नत्त २ मदावत्त वत्त मत्त
 वत्त मावा विहाधय ॥ सद्योय विहाधन हत ॥ गूढा नागय ॥ ५८ ॥ अमृग २ अमृगा रुव अमृग संरुव अमृग त्रिको
 गमामिन ॥ सर्वकृष्ण यं कानि स्वधार्द्र ॥ न स्वाचिकं गय ॥ ५९ ॥ यन्ध २ मदाय ध्व अय विमिग यन्ध अय विमिगा यूप
 ध्व हान संरावा यन्धिक ॥ स्वधार्द्र ॥ ध्व नावगय ॥ ६० ॥ यन्ध २ मदाय यन्ध धार्द्र ॥ मदावत्यां गद्गु स्वधार्द्र ॥ राय
 द्वादा स्वातलं वगय ॥ ॥ धन जस्मिन् वयस ह्वकथं क ॥ ० ॥ अस्मिन् रावना स्वां गय क ॥ वाक् ॥ ६१ ॥ गंगा वज्र यं
 लायक नथा नवजला वीसुभनूय निरुदं गावस्य मत्स्य पिता सुनवक सिंहाय निष्ठा कसू निरागवान् मदावेना

वनसुवर्णवर्णधर्मवर्णमूलाः ददीयमानं यश्च वडांकुष्मादिनां हानसत्त्वमावाहनं विहायः ॥ राधूपानिला
 ऊन वडां गावा मगा रुं गा य ॥ सुनां ॥ यत्संगलसकनसत्त्वह गन गस्य वृद्ध वृद्धस्य दा व नदी गस्य विवृद्ध वृद्धे यहा गसं
 ग नृ चि वस्य गत्संगलं रु वं तु ग य न मा रि ध के ॥ यत्संगलं सुवननाः सुनयुजि गस्य सधर्मस्य गन कथि गस्य जून रु व
 ७ स्य ला क य य नि दि गस्य नि ना त्म क ग व रु व तु ग य मा रि ध के ॥ यत्संगलं पु व न धर्म वस्य नित्यं सत्त्व निक स्य जिन वं ध ७
 वनस्य नित्यं सत्त्व य का न दि गस्य सुसंगलं रु व तु य न मा रि ध के ॥ ॥ विधि र्थां जू सि धू जा ॥ य स्या न्या स ॥ उ मं
 न र म हा म न य स्वा दा ॥ उ हं म म न य स्वा दा ॥ उ वं ऊ या द य स्वा दा ॥ उ वं ऊ म्नी स्वा दा ॥ उ हं व च क व लि न रुं स्वा
 दा ॥ उ वं ला म्नी व रुं स्वा दा ॥ उ यं म्नी व रुं स्वा दा ॥ उ वि हं म्नी व रुं स्वा दा ॥ उ वं ऊ म्नी व रुं स्वा दा ॥ उ वं ऊ म्नी व रुं

स्वादा॥ उ० द० ग० श्री० य० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० वि० कि० नि० न० द० स्वादा॥ उ० ह्री० गा० य० ग० द० स्वादा॥ उ० ला० ध्या० य० द० स्वादा॥ उ० मा० ला० य०
स्वादा॥ उ० गी० गा० य० द० स्वादा॥ उ० न० त्या० य० अ० स्वादा॥ उ० मे० गी० स्त० ल० ना० य० स्वादा॥ उ० अ० मा० घ० द० णि० (६) द० स्वादा॥ उ० सर्व० या०
य० ज० ह० सर्व० या० य० वि० ह्म० ध० नी० स्वादा॥ उ० स० व्वे० ह्म० क० क० मा० नि० घा० क० म० क० द० स्वादा॥ उ० ग० न्द० ह० कि० न० द० स्वादा॥ उ० स० न० ग० म० द०
स्वादा॥ उ० गी० ग० न० गी० द० स्वादा॥ उ० स्त० न० क० रु० द० स्वादा॥ उ० अ० मृ० क० य० रा० य० द० स्वादा॥ उ० वे० न्द० व० द० पु० रा० य० द० स्वादा॥ उ०
रु० द० या० न० य० द० स्वादा॥ उ० ह्री० ली० न० य० य० य० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० ग० रा० य० द० स्वादा॥ उ० अ० द० य० म० नि० द० स्वादा॥ उ० य० गि० रा० न०
कू० ट० द० स्वादा॥ उ० स० म० क० रु० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० यो० ध्या० य० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० क० ण० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० या० ण० द० स्वादा॥ उ० वे०
ज० ह्म० ट० व० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० व० ण० द० स्वादा॥ ॥ य० लो० ध्या० तु० गि० ॥ ॥ उ० वि० धृ० ग० सर्व० स० क० ल्य० रा० वा० रा० व० वि० व० कि० न० ध्या० क० सि० द० न० म०

स्मामिहुडंयकृतिनिर्मलं॥ येजा ॥ उं हं क म न य दूं रू ॥ धान १०६ ॥ यथधर्मो ज्ञानमू कियव ॥ ॥
 बलिविय विविधंयूजा ॥ ॥ मधुथिल स्वांनन ॥ मुनि ॥ उं नमस्तुः ॥ हं क सिंदाय धर्मवक्यवैरु कः ॥ रू धा
 रुकंजगत्सर्वे ॥ हं धय सर्वेदुर्गमिं ॥ १ ॥ नमस्तु वजा श्रीवाय धर्मका रुखराव नः ॥ सर्वसत्त्वदिनाथाय आत्मन
 त्वयदहाकः ॥ २ ॥ नमस्तु वला वाय समनक सखावनेः ॥ रू धा रु क स्मिं सर्वसत्त्वदिनाथाय कः ॥ ३ ॥ नमस्तु य
 मां श्रीवाय सखावय सखावटः ॥ आह्वसय नि सत्त्व धर्मो मृगयवर्षे ॥ ४ ॥ नमस्तु विह्व श्रीवाय सखावक
 तमनूस्मि ॥ विह्वक मेकवो क्त्वां सत्त्वानां दूः ॥ स्वहं क य ॥ ५ ॥ नमस्तु वजा श्रीवाय रू धा रु क सखावय ॥ सर्व
 सत्त्व उपाय मू सत्त्वदत्ता कलिशक्ति ॥ ६ ॥ नमस्तु वजा श्रीवाय विनामहि ध्वजध्वं ॥ दानन सर्वसत्त्वानां सर्वोसा

ॐ

यत्रियुत्रय ॥ १ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥ वक्रुर्मालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्राय ॥
६ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥ वक्रुर्मालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्राय ॥ ७ ॥ नमस्तु हस्त्याय
लोकथागीनानृत्यादद्या वक्रुर्मालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्राय ॥ १० ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥
कृष्णाय हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥ ११ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥ १२ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥
हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥ १३ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥ १४ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥
वक्रुर्मालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्राय ॥ १५ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥ १६ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥
वक्रुर्मालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्राय ॥ १७ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥ १८ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥

मधुलविस्मृतन॥सर्वगतय॥चक्रयूजा॥दक्षिणा॥किरू॥निसना॥दगु॥समय॥क॥क्षणा॥कव॥ ॥
 ॥ति॥मृष्टि॥यक्षा॥नक्ष॥विधि॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥संक्षय॥प्रतिष्ठा॥विधि॥माह॥गु॥नू॥मधु॥ल॥यं॥व
 गवा॥सिध॥रु॥य॥समा॥धि॥सर्व॥म॥क॥था॥पि॥न॥स॥रु॥वा॥ना॥॥धू॥य॥नि॥नां॥ज॥न॥॥वि॥धि॥ध्वं॥यू॥जा॥॥द॥व॥यू॥जा॥॥
 शा॥व॥ना॥खां॥॥ ॥आ॥या॥धू॥नि॥यू॥पै॥ला॥घै॥कु॥ति॥ग॥त्य॥न॥॥ ॥ऊ॥न॥क॥र्म॥द॥व॥गा॥न॥स्व॥स्यं॥ ॥७॥
 ह्य॥॥आ॥वा॥र्य॥स॥मं॥ग॥य॥॥ ॥न॥द॥नू॥नि॥व्य॥न॥द॥व॥गा॥मृ॥ग॥रू॥य॥॥य॥ति॥ष्ठा॥या॥य॥॥द॥व॥द्व॥व॥नः॥
 आ॥वा॥र्य॥वा॥हा॥व॥॥शा॥व॥ना॥॥ग॥गा॥॥क्ष॥सर्व॥ग॥था॥ग॥न॥स॥हं॥स॥नू॥यं॥सर्व॥वा॥धि॥स॥त॥नू॥यं॥म॥धु॥ला॥य॥य॥
 नि॥वृ॥गं॥म॥धु॥ला॥धि॥य॥ति॥मा॥ला॥कः॥॥वा॥या॥घो॥दि॥॥यं॥वा॥य॥वा॥यू॥जा॥॥खा॥न॥क॥ना॥डा॥ऊ॥आ॥मा॥नं॥दा॥

ऊनयं वाने ॥ उं सर्वगं गगनसुखलितविलासतमिगनमाप्तिरुगवत्कजः द्वंद्वं क्षाः ॥ यतिश्चक्रसः
मां कुलिं नाथ क्षाः समयस्त्रं ॥ धूमि यदयावत्स्नानया क्षलक्षान् ॥ ऊऊमान ऊऊ यन्निचूया, त्वउय
निथकाया स्वां हायोजे न य ॥ आचार्यं ध्वं धूययाय, वाक् ॥ ॥ उं रंगवनजमूकसः
वैविद्यानां ऊं नभास्तु गं ककुमिच्छामि गनाथं प्रमिष्ठा कनूष्मत्सकं, सिथानां मनूकं याय, यूया कं यः
मिष्ठा यत्रः गन्मरकस्य, रंगवनप्रक्षदकर्तुं, मदसिः ऊथादि सर्ववृद्धाश्च, रुयिगसंयतिष्ठिना
ः आमादया ऊथा कृक्षोगदलिस्ते दिदाक्षुगोः ॥ जूगस्वहा गं नाथं रूत्वा यूयादिकाः सांगृहान
नूकस्याथ य, वाधिसत्त्वपवृद्धय, समन्वादननुमां वृद्धा ऊगवक क्रियार्थदा, रूदरू वाधिसत्त्वा

ॐ
५

अ. यावान्यामरुदवताः ॥ दवतालाकयालाश्चरुतासंवाधिमासिना. क्षमनाशिवतासत्वा. यकविह
ऊचक्षुषः. अमृकाः इदंमहावज्रियुगिषाविधिर्मयूताः. कविष्यामिऊगत्सूक्ष्म. यथाक्षकयुवावगः
अमृकयामूयादायसहिष्यस्यवगत्सः. सर्वस्याम्युगिषाया. सानिध्वंकर्तुमदर्थः ॥ ३ ॥ ह्वयववान
॥ ॥ अथमसरुवंऊमं. सरुलंजिविगं वमसमयंसर्वदवानांरुविगादंनसंसयः ॥ अथे ॥
वर्करुविष्यामि. धाधिविरु कवकसः ॥ गथागगः कुलायनिमसायस्यानसंसयः ॥ अथममदि
वसादयय. क्षमदयनरुनंः सन्नियारुवक्षय. सर्ववृद्धनिमकुनाथः ॥ गददीजनक्षमकीक्षक
षास्मानदवतामाकृष्यः ॥ याथादि ॥ निर्वाजन ॥ ॐ विम्वयवक्षय ॥ दवविम्वनपिहाउ

डाङ्गुहावया ॥ सिध. गव. ॥ ॐ नमो ॥ दायक ॥ ॥ थन स्वां कृष्णं लं ह्वयं चाम्. पञ्चगव्यं तस्य द
वयाक सनान ॥ ॥ ॐ तं गं संकल सत्. दिगन्तस्य वृद्धस्य दाह्य दिगस्य विद्ध वृद्धः ॥ यः
गं गन्तुं विवस्य विहाता कस्य. तं गन्तुं रुवं शुभं यत्र मां शिष्यक ॥ ॥ थन स्वां काया उनात्रिः
ददनयाय ॥ स्वस्ति वाक् ॥ दनं स्ना ॥ ॐ तं गन्तुं सुवनना सुवपूतस्य. धर्मस्य क. न कथितस्य. नि
वृत्तं न स्या. लाकुर्यं युनिविगस्य निवार्त्तकस्य तं गन्तुं रुवं शुभं. यत्र मां शिष्यकः ॥ ॐ तथा हि जातमात्र
नत्यादि ॥ ॥ ॐ यूवस्तु विय ॥ ॐ ॐ ॐ वाध्या गृध्रक वच वस्तु स्वाहा ॥ ॐ वां दायक ॥ थन स्वा
ना. लिव. रुग. आदिन. कुरुं वयाय नार्थदका. किदाव. उादाव. दायक. रुष्टि समस्तं दादावय ॥ ॥

ॐ
दि

ॐ आः दिवा वासस्य स्वाहा ॥ ॐ आः गिल कुरु वन स्वाहा ॥ (गमन वनं गिक ॥ आया धूं नि. यू. यं लाघं
दुति ॥ ॥ ॐ वे जां कृष्णः ॐ ॥ ॐ वे ऊ या हा जी ॥ ॐ वे ऊ स्मृ ट वे ॥ ॐ वे जां हा हाः ॥ मूज कास्यं वल्ल
थास्यं हात दान ॥ ॥ धन वजं धिस्यं विज न्यास ॥ ॐ व सु या न ॥ आ कथू स ॥ हूं नू गत्र ॥ क्षो मि त्वा २
ॐ कृ स यं २ ॥ ह्वं. क्रा स ॥ गं कृ ठ ॥ स्कं. क या न ॥ सैं. ख रू ॥ ध गि वी जा दल न अ धि ष्ठा न ॥ ॥ धन. १२
वि न का नि ह सु पू. अं क ल भ ला का य ल ड ला य ॥ ॐ हा य गि ह्व ना स. भा हा सैं नि स. ध ल क स्मि न द्वा या
ॐ ॥ म का न. ट का न. अ द न न जा ग रु व. सूर्य व दृ त्वं. ॐ ॐ हा त्व ॐ मि त्वा स अं क ल न ड न ॥ वि न का लि न
मि त्वा कैं क ॥ स ना का का या ॐ द व या कैं ड न ॥ ॥ अ ह्ना न अं ध का ल व दृ यं. प गि त्ति जि नं क वः ॥

[illegible]

ॐ
ॐ

विनिधाय घृणमधूनायासयत् ॥ ५ ॥ वाक् ॥ ॐ ॥ सर्वगथागतः मधूयासनस्वादा ॥ धनक
सिनक ॥ ॐ ॥ सर्वगथागतविनामधूनास्वादा ॥ दूदत्वंक ॥ यं लां घं रुति ॥ वजांकुक्षदिमूदा
॥ हाताक्षन ॥ ॥ ॐ ॥ निजातकर्मविधि ॥ ॥ धनजाचार्यशवना ॥ सहद्वीजादोदवगा
नामाकर्मविशयः ॥ यदीयाद्विषयं वरदस्मिनासर्वोकाक्षधारुपत्रिपूर्वविशयः ॥ यूननागः १३
त्यः सहदयातामाक्षनं मनुविश्वार्यदवगाहदय ॥ यवक्षयत् ॥ गथेवरुलनादिकं कृत्वा ॥
॥ धनजाचार्यथडाहदयमनुडादवयानामावेक्षेणार्थ ॥ मगयाकिनडा ॥ ॐ ॥ काक्षं ॥ ॐ ॥
डाहदयनयादाडायाडादवयाकद्विगणनय ॥ ॥ ॐ ॥ पा. धूं. नि ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ धर्म

[illegible]

कर्तुविधि॥ ॥ धनरावना ॥ ॐ आकाशधरुर्वगर्ग्यवं यथागतददताथेगच्छवृद्धनरु
 तकथयनिसवेत्यक्रमस्वद्वसदानुकम्पका॥ यूनारित्य (ह) षविकल्मषश्चनश्चक्रि. विः
 धरुवविघ्नहर्करुलकिरासयमनावथार्थमश्वकजसाकनकीवसावम॥ ॥ धनवृम्व
 ॐ धामवृन. क्रसयं घास्वना मरु ॥ ॐ कर्तुविवलायनायकि. स्फुटयश्चं स्वाहा॥ ॥ धन १४
 ऊकाक्रिया॥ स्नानयाय ॥ श्रीवज्रवदवत्रयदसवजयानिसमूर्तिगाश्चसदिगस्यः जमासिद्धि
 ऊसंगलं हिरकनं. यवमार्थसिद्धि. तसंगवर्गवन्तु. क्षात्रिकवर्गवायः॥ ॥ ॐ उंवसुवि
 य॥ ॥ ॐ दिवावासस्य स्वाहा ॥ ॐ वाष्पं गृहकवववसु स्वाहा॥ ॥ वज्रगावा. मठ रुंलः

ॐ
 क

या॥ नानासिंहाहल पंचयक॥ नमस्तुभ्यं याथ वसंतस्य दिग्गताद्यय लखं दाय ॥ ॐ नमः स्वाहा ॥
नासिक ॥ पूषादियूजायुति ॥ ॥ ॐ नमः रुद्राय सनविधि ॥ रावनास्त्रानयाकयूजायुति ॥
॥ स्वतिवाक्ययवय पतिवन दिग्गतास्यं वियक ॥ लाहाग्निरक्षा ॥ नानाश्रुनविय ऊनाक
यविय ॥ ॥ ॐ सर्वेश्वरनक्षत्रमनस्वाहा ॥ गिस्तांतिक ॥ सिहं नृप ॥ जनक रूपा कल ॥ वज्रिगः
स्यं नानाव्यं जनन याडाहाहावय ॥ ॥ ॐ नमः समकवृद्धानां सर्वगथागतानां ॥ डाकावनंद
यस्वाहा ॥ ॐ नमः स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ धनग अघिष्ठान ॥ ॥ आगं दयक ॥ ॥ ॐ यानाय स्वाहा
॥ अयानाय स्वाहा ॥ ॐ यानाय स्वाहा ॥ ॐ अयानाय स्वाहा ॥ ॐ दिवानाय स्वाहा ॥ ॐ दिवानसमाधिः

ध्यानविनयनस्वादा ॥ हायविनयनकायानक ॥ उंजीः स्वादा ॥ वाकनवधाय ॥ नस्वाकसान
मानंकास्वाक ॥ मुखसिद्धि ॥ ग्वय. ग्वानविय ॥ वाकथस्वाय ॥ अउवंविय. चनामधिमादि
गयाडावा ॥ दायक ॥ ॥ पूषादियूजा ॥ यं. ला. घं. पुति. ॥ ॥ ग्निजूनयासनविधि ॥

७१
ह

॥ ॥ धनरावना ॥ उंमहासूखवऊऊः हूं वः साः सूत्रगलं महयिनि ॥ सर्वगथगतलकि ॥ १५
हनहासहननकावयन ॥ ऊऊमानंहाऊनयंगयक ॥ उंमहासूखमहावागसिवंसर्वऊगय
ति सर्वसत्वमना व्यायि सर्वसत्वहदिष्ठिग. सर्वसत्वयिगाथेव. कामागधः समया छिनां सत्वानां न
नमनाथं. कामास्तुं पत्रियूवयन ॥ धर्मधरुवधिथाना समय समनना दधिद्वयया सर्वसत्वानां. कः

[illegible]

आदि

दक्षिण सुवर्णयासुर्वायागु महादलयप्रायनी चन्द्रसूर्यविक्रानावांगु उग्रशुभमसलानशालयाडा गुन ४

सकसांवाधिहानयागुवजंअधिमानयानागयागुअलंनंरुडाधनाधानगुआकाक्षाथेनथाहाम
दयावागुवजथंरुत्कंरुक्कसजियावांगुसंसात्रयागुदुःखगत्ररुथकनिर्मिनिनथथिंगुअरियः
कजियनिसुविशविश्वारुनधकगुन्याकपार्थनाया॥ ॥रावना॥ ॥तमानजसाविश्विगाव
दलकमवागुविचयसूर्यउपविष्मषसत्यलीकंवजनेनूपांविशावाभा ॥आयानिआहानिनका

॥ शिकायाधिसान ॥ ल ॥ गदनखद्विजमयूवेवानीगांदिगवलिनरुथागताविद्यादवीक्षसंप्र
 कृष्टाशिशुकः वृद्धानामशिक्षकंगुजगतायवजिष्णुषाकवायथादुरुगथाददधनस्याहि
 ॥ १ ॥ दनाहगुत्रथथित्तुकलसयाज्जुश्चिकविसविद्यायमात ॥ धज्जुश्चिकयैर्गथाध्वानसा
 हि काय वाक विरु खद्विजाकाहाप्रवक्ष्यादिगरसनथागनवानाअवांग अर्थिगुजायमसलानाअ संप्रे

[illegible]

या दया

[illegible]

पं. ला. घं. स्तुति. ग. र्यन॥ ~~खड्गयाश्रिषकलाधकधासायवलाकयानलनायुगुअथिंगुसालपाडा~~ ५

वत्त संरुवया बांगु रुया बांगु अथिं गु सु वरुया वूय रुया बांगु सु फ वत्त संयुक्त रुगु गत्ता वहां हाराय
कंदहिमक वृक्षा काक वज्र सत्व गुणा वयं ॥ ४ ॥ राहनाथ x हलयाल अगिक वृक्षा वक. स्वगु विरुवन
यका हा रुयं बांगु. वज्र सत्व गथा गगया रु रुया बांगु. मकूटा रिषक जिय निरु. विर विष्ठा यमाल ॥
॥ रावना ॥ ओं का वज्रं. वत्त संरुव वूयि नं. हान सत्व न की कर्ग. न रु रू गथा गगय वी रिः कूं रे वरि
विष्मा वूय वजा दिरि वूय मानी यमान मंगल गी किकं रावय ॥ ॥ गगः कलक वरु दिद्य टिगं
वत्त संरुवं मकूटं गत्त रावं वज्रं हान सत्व वूयं यक्ष गथा गग मध्य विर विष्ठा कूल हो न धि विर मंगल
हिल मध्य. लला ग समा गाय ॥ हिल सयूक्त ॥ यू. द. य. उ. दि ४ स्वक ॥ वाच ॥ उं वं रु धा ग व
विषि रू ॥ उं सत्व वजी अरि विष्का ॥ उं वत्त वजि अरि विष्का ॥ उं धर्म वजि अरि विष्का ॥ उं क
मान रुया बांगु यं व वृ यि स्य न मान याना गः गु. अथिं गु मकूट जि हिल यला गका धक रा ल या डा गु वृ ०

ॐ
ॐ

मकुटादीषकः शुभमधिगुदकः तथा गणपतेश्वरमधिगुदया विष्णुनाथांशुः शुभमकुटादीषकः कलाकला २
मवजिअरिषिअः ॥ ॐ दत्त सर्ववृद्धानां शुभाशुभं नमस्कृतं यथाकं पूजनाथं यमकुटयं च कुना
हवः ॥ ॐ सर्ववृद्धवृजामक्षिमहामकुटयगिहृष्टः ॥ ॐ अरिषकल्यादि ॥ ॐ अः वज्रमकुटादिषिच
हंसनगस्यमहं ॥ ॥ धनियदयं ययक ॥ सि ॥ यश्च ह्यानवरावाद्याददिभवजयगं मम अविद्या
यननिरोधह्यानवाफारवाम्यहं ॥ य ॥ हनाथ X धनाहानं उत्पतिरुयाथाहुवज्रयावक १२
जियनिअह्यानरुगकः कडाधनह्यानलायनिमिलिन वज्रया अरिषकजिमितविभविष्णायमा
ल ॥ ३ ॥ रावना ॥ ॥ मगिगिजाः यनयविष्णं अमिगारवूयं ह्यानसत्वारिन्नक्षिष्यं वज्रं वा
मिताहात्मकं विविंश ॥ ॥ अरिषकं नित्यादि ॥ अद्यादिषिकस्तमसि वृद्धं वज्रादिषकः ॥ ॐ
अधिगुयथायनिअथमसधाना अमिगारयावूयइया अ वज्रया अरिषकलाकलासुवा अ गुदयाम

x ललानाडावजगिनाडा मसहर्वमानरुयाडा वजघष्ठजालिकुणमजकयाडा गुन्यामपार्थनाया धकं ३॥
दकसर्ववृद्धत्वं गृहवृद्धसुसिद्धय ॥ ॥ धर्मिवाक्यासं कथू कया नृगा थिपक लडाक्य ॥
॥ अरिषकल्यादि ॥ उं वं जाधियतित्वा यमरिषिभूमि गिष्ठवृद्धसमयसुं समयदाः ॥ उं वं वृद्ध
अः अः ॥ ४ ॥ ॥ १२ प्रह्लायावमिगावृयं घष्ठ (हा वंददस्वम थनयाफनसर्वगथा ग्यः स्यामदहृगं ॥
॥ घ ॥ हनाथ ॥ प्रह्लायावमिगावृयं घष्ठ रुयाडा वांगु घष्ठ या अरिषक डि मिगविशविष्का यमाल ॥ दू
यानिर्मलिनधालसा थाग्यशक्तिन सुत्वपाहियनिदिताया यनिमिहिन घष्ठ या अरिषक डि यनि
सुविशविर्यायमाल ॥ ॥ रावना ॥ ॥ ह्वं ह्वं ज्ञा माघसिद्धि वृयं ह्वानसत्वारिन्नं घष्ठं च माघसि
यनिहता विरावयत् ॥ ॥ गृहिगाशसिमयारुगवन्मयिसनिदिगा रुवः ॥ ॥ धर्मियदय
अथिं अमाघसिद्धि या वृयं रुयाडा मडा धन ह्वानअन गु अथिं गु घष्ठ या अरिषक लान राल याडा गु

पंचसंगधननिकवाक उं ह्रीं श्रीं गुरुभ्यो नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ३३३

वष्टनकथं कथा नूग थियकं ह्वजनादातिंधाक ॥ रावना वाडं चकं वेवाचननूयं ह्वानसलेकवसं वि
रायः ॥ ॥ अरिधकलादि ॥ ॥ वज्र घटकासं हिल कश्च नूग थियकं आलिंगममूद्राकायकं व

जलाय ॥ ॥ घट्टासमयविय ॥ ५ ॥ मरुसंययदं ह्वनदहिमसिद्धिदायकं ॥ ६ ॥ हनाथ

५ ॥ अरिधकलाय धून मरु मलानानि मरु अरिधक मला कडा धना वांगु ह्वानसिद्धिलाययानिसिद्धिन २०

जिमिक विसद्विष्ठा यमालधक गुन्याकयाधनायाना ॥ ॥ धनगुनं जययानाडा ॥ वाक्याय

॥ ॥ दलासिमयारुवावन्निनिदिगारुवः ॥ ॥ हियंधायक ॥ गृहीणासी मयारुवावन्मयिसुः

निदिगारुवः ॥ ॥ जयमालावलाय मरुविय ॥ ॥ ॥ जययायधुंकाडा हलारिधकविय ॥ वज्र हिल सथिय ॥

२ ॥ नानाविजगुन्यादि सत्ययादं वकावयन् मरुणाग यवादानं यच्छयायाग सहि मं ॥ गुन्याकयाय

वाक्यजायाक ॥ मरुलथीक ॥ कितन ॥ आशीर्वाद ॥ मरुलविसर्जन ॥ सर्वं मारुनिश्चय ॥ सिद्धं रिय ॥ दिगुसक्तय ॥ पंचधाल

निश्चयायगु वव्याक मासयाक मरुतागु मवयाक मरुकनगु धनमायं मरुतायनालगाथ गु x
अधिष्ठानयाय ॥ ॥ ॐ ॥ सप्तगिरि नवज स्वाहा ॥ ॥ वाकपूजा ॥ मधुलथिल ॥ स्वां गन ॥ कि
रुत ॥ क्षमायन ॥ आहिवा सगं भाद निष्ठाक ॥ चिपूजा ॥ दाना दगु समय सात्रिगहनयाय ॥ स
मयावका गहवका ॥ ॥ ॐ ॥ यक्ष सिधक विधि ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ सयाक विधि ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ क्रायांक
ल सगं मट सिद्ध मूक सं सया रुदिगुलिसक धनि थाक य ॥ ॐ वाय ॥ पूषा रुं न सक ल्य याय ॥ कृष्ण वन्ध
न पूजानि मि लो थं x ॐ दं पूषा रुं सं जूय धा स्व या मय दं ॥ गु न मधुल दन ॥ यक्ष गवा (क्षान ॥ सिधक य म
नि र्देष मा मधु थिल ॥ तिसमाधि x यं व गवा याय x कल सगं मट रु सं सिध मू सया रु दिगु समय दि ॥ शवना ॥
धूप नि ला ॐ न ॥ ला हा इ नि व का ॥ ॐ धन विधि थं पूजा ॥ पूषा न्या स ॥ यं ला धं रु ति ॥ द व पूजा ॥ शवना धूप
न वव मास मरु लाक धनमा वरु लयाथ धर्म या आ ला रु ल लं ला लयाथ गु व या म यार्थ ना या धक ॥ x

२ वाकलपूजा

निलाञ्जनलासाग्निकान्ता॥ स्नानधमलुल॥ सिध॥ ऊँ॥ स्वां॥ देवय॥ समयधाममट॥ पृथग्यास॥ गायत्रय॥ सिरुं॥
य॥ पंलांघं॥ रुमि॥ ६॥ गायकल॥ रत्नभावावस्थय॥ शवना॥ लासाग्निकान्ता॥ सग्वं॥ विय॥ सिरुं॥ नूय॥ गावाहनकंद॥
काय॥ यानं॥ पा॥ स्वस्ति॥ सशान॥ गुन॥ लुल॥ दनक॥ मट॥ पूजा॥ य॥ र॥ गाय॥ विय॥ संखलन॥ स्नान॥ वाक॥ १॥ १॥ स्वदय॥ सु॥
वीजा॥ कवं॥ माना॥ लाक॥ धा॥ रु॥ सु॥ लि॥ ला॥ अ॥ क॥ नि॥ रुं॥ वनं॥ ग॥ ला॥ ग॥ ला॥ दा॥ रु॥ य॥ धी॥ लं॥ लि॥ नं॥ वि॥ क॥ थ॥ न॥ या॥ या॥ दि॥ निलाञ्जनः २१
कल॥ स॥ व॥ ख॥ ल॥ स॥ नान॥ ऊ॥ ल॥ न॥ लं॥ स॥ क॥ ल॥ स॥ ल॥ व॥ ऊ॥ य॥ न॥ मान॥ न॥ म॥ य॥ गं॥ धा॥ व॥ सं॥ यू॥ क॥ सं॥ ख॥ सं॥ ६॥ धि॥ रं॥ पं॥ व॥ यि॥ यू॥ खं॥ दं॥ का॥ न॥
म॥ रु॥ म॥ द्वा॥ र्थ॥ सं॥ वृ॥ द॥ व॥ ऊ॥ सं॥ सु॥ पि॥ न॥ वि॥ या॥ क॥ ल॥ ६॥ ॥ घ॥ ट॥ वि॥ रा॥ क॥ र॥ फ॥ नू॥ य॥ ख॥ रा॥ वं॥ अ॥ लं॥ क॥ न॥ म॥ अ॥ कि॥ नी॥ ऊ॥ ल॥ नू॥ यं॥ स॥
टि॥ गि॥ सा॥ ध॥ न॥ द॥ व॥ ना॥ च॥ कं॥ स्नान॥ स॥ ल॥ मा॥ नी॥ य॥ ह॥ दि॥ ऊ॥ कि॥ न॥ रं॥ वि॥ रा॥ य॥ ४॥ ॥ सं॥ वा॥ थ॥ य॥ क॥ वा॥ क॥ ॥ ७॥ अ॥ ४॥ स॥

वैडह्यकषासुषुषुसर्वापायविष्णुधनं ह्रस्वादा ॥ श्रीकनं गिलक ॥ उँआः वज्रनेललयनाय स्वादा ॥ थकलिक
केवाकं ॥ उँआः मकूटकषाधाव(ह) स्वादा ॥ उँआः उषकवन्ध(ह)लानाकर्ष(ह)स्वादा ॥ दामवसयलयाक ॥ य
ननुकंसिद्धयैक ॥ उँआः युक्तकषाधदनस्वादा ॥ वृसिद्धगयरागसं ॥ उँउद्यागात्यादि ॥ उँलंकन ॥ उँलून्य
गाकनूष्णरिनंवाधिविरुस्वयंदर्यनदृष्टा ह्रस्वादा ॥ थनकमालिस्वकांनु ॥ दिक ॥ रुनुननु वृसायाककेवास
कलंसयसैवस्वकथा ॥ स्वरिकैवो ॥ थाकालिमंनुथिल ॥ स्वांवाय ॥ सुनि ॥ क्षागाधन ॥ दमायन ॥ आधिवोद ॥ स्वर्ग
वियवस्वलाय ॥ वक्रमधिनंरागयाव ॥ गमककनाक्तयागनडाकाय ॥ वाकधिदिगूदव ॥ आगंदव ॥ गदस ॥ कल
क्षायक ॥ वराश ॥ थाका ॥ नक ॥ पनिकर्मवियक ॥ मंनुलविसऊन ॥ स्वगंतय ॥ मक्षानिच्छय ॥ वित्यूजा ॥ जाद

सिरुनूय

सुख॥ दिगुसक्तयद्वाक॥ समयावक॥ डाऊनाडान्य॥ पूजानयसिडा॥ कलंशल॥

॥ धनिसयाकविधि॥

॥ वाधानयंकविधि॥ ज्ञायांकलहासुखंमनयंवगवयागुधतिथाकय॥ ७ वाय॥ मुखलाऊनअधिमानवऊसुनावंध

नयूजानिमित्तार्थ॥ गुनमधुल॥ यंवगवयाय॥ सिधनय॥ मधुलथिल॥ स्वांवाय॥ मुक्ति॥ जिसमाधि॥ कृष्ण॥ सुख॥ मट॥

ध
दि

थायिंयूजा॥ रावना॥ धूयनिलाऊन॥ धा॥ सि॥ ऊ॥ स्वांने॥ स॥ धा॥ म॥ पू॥ यधर्मायादि॥ वाधानयंककनसिकागाकअनद्य॥ २२

क॥ यिगदयडां॥ सुख्यदहन॥ धनंदनक॥ धारुसखावाय॥

॥ स्वांमधु॥ दवयूजा॥ सुदूगकावनिडाभनय॥

॥ नायदनु॥ सुखंसिद्धम॥ धनियूजा॥ यधर्माऊकामूक्तिपूय॥ हागाकन॥ विसऊन॥

॥ यंकयिं॥ रावना॥ नि

लांऊ॥ गावामटरंगाय॥ यंवगवयविय॥ १॥

॥ वाक॥ ३॥ मधुलथिलसूखदयादि॥ १॥

॥ ३॥ नमासधाकोना

यस्मादा उंजादित्यायस्मादा उंरानवस्मादा उंसहमानसवस्मादा उंगयनायस्मादा उंगयनस्मादा उंसविना
नवस्मादा उंविशवस्मादा उंसगदगियेयस्मादा उंदिकुनियस्मादा उंमूर्यगियस्मादा उंगित्वायगियः
स्मादा॥ ॥ रावना धूं धा सि ऊ हां नेवद्यादिथधर्मोत्थादि ॥ (धोवा द्वाय ॥ अर्घ ॥ ना अर्क द्वा मि. गय ॥

॥ ॥ उंनमारुगवत्यआदित्यायकाष्ठिव (गगय, आदित्यगर्हसहूनाय, कलिकुद (गारुवाय, अन्ननसहि
गाय, कर्कतनयमनागाय, वधूककुसुमसहृणाय, वकवासवकयूथगन्धजग्यायविनाय, उनंगनथसमान
धाय ॥ अर्घ ॥ अर्क गगन्धयूथधूयदीयायसावयगिगृकिगान्दानयलं
थायमानअमूकनिमित्ताथआदित्यादिअर्घयगिहस्मादा ॥ ५१२ दक्षणा ॥ (क्षक ॥ उंनागसंरुवसंकासय

॥ वृषिध सूर्योदक वृषिध द्वाय ॥ नृत्वंस

॥ वृषिध सूर्योदक वृषिध द्वाय ॥ नृत्वंस

॥०॥ निरुह्य वा वचनविधिः ॥

॥ २८०२ ॥ ॥ धोसंनवविद्यया

ॐ विष्णुयूक्ता ॥ ॐ किं कृष्णाय ॥ स्वस्वस्वस्वस्व ॥ समयावका ॥ कडगावा ॥ गणवका ॥ मूकसूचि ॥

11 6 11 23

॥दूसलकूङ्ग॥कूल॥सर्वंमट॥बलि॥यंवगवयाग॥थरिथाकथ॥श्वाय॥गुन्मधुल॥यव

स्वस्तिकसंगस्य ॥ गुग्गुलुमधुलदकं ॥ लंछवल्लियूजा

शिवनाम

गरुंगाय। नीलाञ्जन॥ ॐ ह्रीं मावागय मद्दृष्टिदायकं हारिदिकाकाक॥ रुलाशिवकविय॥ कलसम्भवं मटसरवताधूय
निलाञ्जन॥ विधिश्चंयूजा॥ दवयूजा॥ रावनाधूंगावामटरुंगाय निलाञ्जनविधिश्चंयूजा॥ वलिवियवाकयूजा॥ मधु
थियस्वांवाय किगन॥ मुक्ति॥ हाराकन॥ दमायन॥ जूहिबोद॥ सम्यहाय॥ वित्यूजा॥ दंशजादकक्षा॥ विसृजून॥ कक्षा
मधुयागालडाळा॥ आगमसनयसिद्धाजालंयूजा॥ समवकागक्षवक॥ धरियाहिगुदनदूषाविधि॥ ॥
सतिकुन्नु॥ कलसम्भवं मटमूखगनाधयं वराय वलियागुधगिथाकय॥ क्षम॥ धवाय॥ गुन्मधु॥ यं वराय दाय॥ सि
॥ जूलिं ॐ नायकाकक्षाय॥ नखस्यंदकाय ॥ धगय॥ मधुलथिल॥ याधजानम्॥ किगन॥ मधुलविसृजून॥ तिसमाधि
कलक्षाधिवानकक्षासम्भवं मटजूलिं ॐ नायमूखनायधगिविधिश्चंयूजा॥ यधमोदियक्षयक्षनिंयूजा॥ यलांघं
॥ शीलक्षिसरावना॥ शास्त्रदवीयमास्तिगानीनात्यनसन्निरासिंदूनसयमदस्माशीलक्षिविराय॥ ॥ यूजा॥

शुभिलाङ्गुलनयन ॥ अग्निस्नान ॥ अग्निन्याहूति ॥ चतुर्धाधूय ॥ दधयूजा ॥ रावना ॥ धूपगात्रामनरुं गायनिलाङ्गु
 नविधिधूपयूजा ॥ दधगात्रागिविधय ॥ ॥ धूलि ॥ दीपावागलस्यस्यंदकाय ॥ स्वस्तिकसकय ॥ गुग्गुलुलदनक ॥ मट
 क्रस्त्रसिधमूनिपूजायधर्मोत्थादि ॥ ॥ क्षाणाक्षनविसृज्जन ॥ ॥ क्षिप्ररावना ॥ लाहागिनवका ॥ क्षीलवसुगय ॥ सा
 धूलिमित्रा ॥ दिगल्लय ॥ स्वस्तिवाक ॥ लज्जालाय ॥ तनग ॥ नायिगदसूयूजा ॥ मासकलका ॥ कार्तिकनंरुगिव्यका ॥ नृसिध्वंक ॥ ॥ २४
 नानयाक ॥ अश्वलक्षाममाद्रुयक ॥ लनंदायक ॥ कृष्णलंवनदायक ॥ त्वालसियक ॥ सवासस्नानयाक ॥ धनयन ॥ धडाशथास
 कय ॥ पंचयलवनमानसय ॥ पंचगयाविधय ॥ स्वांक्षवाक ॥ विसृज्जन ॥ ॥ धनकृष्णरिधकस्नान ॥ गाथा ॥ यद्वज्रल
 स्य वलमालागीतं ॥ सनीत्ययत्युयधूधे ॥ वलदीयद्विद्विगगान्धे ॥ यूजाविधोयगिसमंविमले ॥ यगृते ॥ गत्सङ्गलंरवकु

थ
 क

२४

नवयल्लमारिधके४५

॥ धनसिन्धुः ॥ दीयतासिद्धिगतायाऽवरुक्तायनियता ॥ मरु ॥ उदिव्यवाससखादा ॥ धन

रिगुवलाश्रयुनू॥ इत्थं ज्ञानकं सिद्धायकं॥ स्वस्ति वाक्॥ सिनसरुनिनवियजूड्जानविय॥ मनु॥ ॐ दग सुर्ववृजानां ने

धातुकनमस्तु न यूष्माकं यूजना र्थाय मकुटयं च कुलारु व ४१।

॥ॐ कंजसत्त्वं॥ हगण्डिकांकावायकः॥ॐ अ॥ वा॥ उ॥

स्वनाद्यणिं सगान्धनैर्जङ्घूण्यन्मिह मालावलंबिनस्तु नन्देष्ट स्वादा॥ लासाग्निप्रज्ञा॥ सिद्धल्लय॥ धूलिव्याप्तसखाँदृशकस्याः

शिवना॥ ह्यन्याकन्धारिन्नं वाधिविजं स्वनूपं शिवना॥

॥ न ता ख द्द द र्थ वी जा क्ष नं नाना धा तु र ह लि त्वा द क ति ष ह व नः ॥

गत्वारुस्मादाकृश्यारुलंतीनविचित्र४५।

॥ ज्ञायाधूनि यूयलाघं सुग ॥ बालकना नयत्यसगयाडा नाहागि सख

वाचं॥ ज्ञानकं बलविद्यमं विद्य॥ मनु॥

॥ अथ गङ्गा मूलाह्वय कल्याणकली गृहीत्वा पाणी नायाधी वृद्ध

त्ययवमौरेयनसत्यनहाननयुक्तायायात्ममधुलंजनसत्यनभनार्थकामार्थयन्त्रियूलयन्॥

दूयक॥ श्रीक्षाननेमलका (६) स्वस्ति वाय॥ लादाग्निनका॥ जूलिनंत्वय॥ मरु॥ ॐ सर्ववृद्धवृणमनीवडा कृषवंधगिष्ठ

२ इन्द्रस्वाहा ॥ कदासांग ॥ उर्वरुदास समय मनः स्मनश्चाह ॥ सग्वनं त्वय ॥ ॥ थन रुद्रिदूतलत्वं धालथस्य

५६

॥ अथ नाथगणनादि ॥

॥ थडा र थाः २५

सम॥ व्यालसलखरुद्रुनस्यं ह्वयिगहन॥ वाधानरुद्र॥ वल्लुङ्गाद्य॥ मरु॥ ५॥ दिव्यानि समानेनानि नानास्वास्वाय

लाघसुनि॥ ॥ गंगाशक्तिस्तुति॥ स्वागच्छावना॥ अनादिनासिद्धिबद्धाववकनावदृष्टा॥ ॥ १७॥ अनादिप्रधान

स्वालाययाश्वाचमनयाश्चमनयान्दृष्ट्वास्तु ॥ १०॥ क्षमावापानस्तु ॥ सन्नायस्त्यदयापूयवा ॥ मनु ॥ ७५॥ ज्ञाया ॥

मित्रयज्ञं स्वाहा ॥ घृणाद्द्विय ॥ मरु ॥ उंथाऊ काश्चिंयगिह स्वाहा ॥

॥ धूलायागनथियक ॥ यंलाद्यंमुनि ॥

॥ ॥ दहावलिविय ॥ कमालियूजा ॥ भाहानी साधन ॥ मधुलथिल ॥ स्वांगन ॥ पूर्यायाय ॥ हाताकन ॥ दमायन ॥ आः

विर्वाद ॥ सग्वगय दैदं धा यूजा ॥ सवाद्गि ॥ पूवहाय कलक्ष ॥ दहावलिक्षाय ॥ विसऊन ॥ मधुयाग सिधमूकलहालडाः

ज्ञाय ॥ ॥ दीभावागा यालंयाक ॥

॥ ॥ निपाहिगुदहाविधि ॥

॥ ॥ ॥ नगरीमनथक्रियाविधि ॥

॥ ॥ ॥ दसवक्रु ॥ जायांकलसग्वंमगनागद्य ॥ मुखटवल्लिधगिथाकथा ॥ ॥ वाय ॥ पूवराऊ संकल्य ॥ रीमनथ यूजाक्रि

यानिमित्थार्थ ॥ गुनमधुल ॥ यंचगद्य ॥ सिधगय ॥ मधुलथिल ॥ स्वांवाय ॥ लंखवलिविसऊन ॥ जिसमाधि ॥ दूधायिवा यूजा ॥ की

लंरावना ॥ कीलंगाय ॥ उष्टीववियामरु ॥ उंघघघाटय ॥ २त्यादि ॥ कृष्णधिवसन ॥ कलसग्वंमगादियूजा ॥ पूनाद्वव यूजा ॥ कू

दवनसस्यंदूकाय॥ जातकर्मनीस्य॥ वृत्तादहागा॥ हागरिणीकाकाय॥ स्वांगत॥ दक्षायूजा॥ सवतादि॥ आहीर्वाद॥ मधुयागाम

तडा॥ वलिश्चयमडा॥

॥ॐ॥ गिदूसवक्रिया॥

॥ सगिकूद्वलिविसऊनवलिश्चय॥

॥ थनलियागासननव

गदमधुवाय॥ थडा॥ गदयगिरास्यंवीदीदावस॥ दिग॥ सवाय॥ रुकि॥ मधि॥ सिसादल्लादिनदिग॥ सवलाकिस्वास्यं॥ लाकया

ध
ज

लयगायघाय॥ यंचसूक्तानडयक॥ जग्निक्कुदन॥ समसंधायनाधूनकाव॥ ॐ॥ नायअलिंकायकलक्षाय॥ वस्त्रस्यंदूकाविश्व २६

ककलसग्वमटनागवमखट्॥ शीलक्रियदयकिणिकिदाआदाअलिं॥ दक्षवलियलिकर्मनगय॥ ॥ॐ॥ वायगुनमधुः

ल॥ यंचगवा॥ सिधगय॥ मधुथिल॥ लंखवलीक्षय॥ गिसमाधि॥ यंचवकायाथग्वय॥ कक्षाधिवासन॥ कलक्षादिकिदाआदायू

जानेवयादि॥ पूषन्यास॥ यंलांघमुक्ति॥ यधर्मादि॥

॥ अग्निस्त्रयन॥ यूलंदव॥ मधुल॥ पूजाविधिश्चंयूजा॥ ॐ॥ आग्नादः॥

दवताहृति॥ २ ॥ अथ यागिगृहहस्तकीया॥ दहकर्मशानविधिथं॥ यगिष्ठाविधि॥ धनलिनडाग्रदयूजा॥ ॥
मध्यसुखानहृल्लगसं॥ रावना॥ रावनायगिसनादवीमात्मानंरावयत्॥ कणाखददथभूकानेवदुमधुल्लगस्थायविषं
कात्र, गदस्मितांगुनूवृद्धाधिसत्वादीनां भूवरासस्यसत्त्वानां कृत्वा, अगनिष्ठं भुवनगत्वा, मदायगिसनायमुखात्, सगलयति
वानान्पूजतागगलयद(हादृष्ट्य॥ आकर्षण॥ उँवजवक्रहं॥ ३ ॥ उँवजोँकूँज॥ उँवजयागिहं॥ उँवजशूटवाँ॥ उँव
जाँवहाहा॥ धूप॥ कर्योव॥ नीलाञ्जन॥ स्ना॥ विरुञ्जीखण्ड॥ ऊँजगायू॥ स्वांगायू॥ नेत्राय॥ मट॥ धन॥ पूषाया॥ यलाघंभुग॥ जाय॥
उँमहिधनिवजहिमहायसैगिँवहं॥ रुद्र॥ स्वाहा॥ यलाघंभुग॥ १ ॥ पूर्वस॥ स्नानगसं॥ रावना॥ आर्यमहासादसयमदः
निंरावयत्॥ धूप॥ क्षीखंद॥ विगू॥ कस्तुरि॥ ऊँजमहाकू॥ स्वाँडत्यन॥ नेत्रिय॥ दीपहाकू॥ विकं॥ समया॥ जाय॥ उँजमृगवत्रवत्र

१ ॥ यवत्र विष्णुर्ह्रस्वः २ ॥ रुद्रः २ ॥ स्वाहा ॥ यं लां घं मुग ॥ २ ॥ दक्षिण ॥ स्नानं संरावना ॥ आर्यमहामायायूमीमात्मानं रावयन् ॥ धूप
कक्षणी ॥ विनयं वगन् ॥ ऊऊं ॥ आडं ॥ स्वां ॥ नरुल ॥ नेविश ॥ दीप ॥ काविकं ॥ जाय ॥ उं ॥ नमृगवित्ताकिनीगर्हसंनक्षत्रिज्ज
कर्षादिह्रस्वः २ ॥ रुद्रः २ ॥ स्वाहा ॥ यं लां घं मुग ॥ ३ ॥ पश्चिम ॥ स्नानं संरावना ॥ आर्यमहामायायूमीमात्मानं रावयन् ॥ धूप
धी ॥ ल ॥ चिरु ॥ नक वन्दन ॥ ऊऊं ॥ मकाडं ॥ स्वां ॥ काडं ॥ नेविश ॥ दीप ॥ यकाविकं ॥ जाय ॥ उं ॥ नरु ॥ संराव ॥ २ ॥ दियवलविष्णुनि
ह्रस्वः २ ॥ रुद्रः २ ॥ स्वाहा ॥ यं लां घं मुग ॥ ४ ॥ उरु ॥ स्वां ॥ संरावना ॥ आर्यमहामायायूमीमात्मानं रावयन् ॥ धूप ॥ वा ॥ ऊऊं ॥ मकाडं ॥ ने
विश ॥ दीप ॥ नामविकं ॥ जाय ॥ उं ॥ विमलवियूलजयवलनमृगविभ्रह्रस्वः २ ॥ रुद्रः २ ॥ स्वाहा ॥ यं लां घं मुग ॥ ५ ॥ धनीलिगदपू
जा ॥ ॥ रावना ॥ उं ॥ आदित्यदवगामात्मानं रावयन् ॥ धूप ॥ कुंदन ॥ स्नान ॥ चिरु ॥ नक वन्दन ॥ ऊऊं ॥ मकाडं ॥ स्वां ॥ काडं

29

सुगति॥दू॥मधि॥ध्वनाय॥रुलमिगसी॥वीदीखानडा॥सय॥मावासा॥दीपयल्काविकं॥अर्घेहिऊल॥नेविश॥जाय॥ॐ
नमारुगवगमधात्कानायखादा॥पंलांघंमुग॥ १ ॥ॐनमाशामदवगामात्मानंरावयन्॥धूपकपूज॥स्नान॥विरु श्रीखं
ऊ॥ऊऊमगाय॥स्नानगाय॥सुगतिधनि॥मधिवयवाधि॥रुलमागसि॥वीदीशायूदासल॥सय॥हांघ॥दीपशायूदासलविकं
॥अर्घेसति॥नेविश॥जाय॥ॐहीगांहुवखादा॥पंलांघंमुग॥ २ ॥ॐअगवदवगामात्मानंरावयन्॥धूपगुंगुलि॥
विरुवकवदन॥ऊऊमकाडं॥स्नानकाडं॥सुगतिवाक्॥मधिलश॥रुलनानसि॥वीदीयल्का॥सयथूसायूल॥दीपयः
ल्काविकं॥अर्घेयूल॥जाय॥ॐवकांगकमानायखादा॥पंलांघंमुगि॥ ३ ॥ॐवधदवगामात्मानंरावयन्॥धूपसऊन
॥विरुकसुनि॥ऊऊमशीयूव॥सुगतिधल॥खां॥यूव॥मधिमथ॥रुलममसि॥वीदिशीका॥सयलं॥दीपशीकाविः

कं॥ अर्घल॥ जाय॥ ॐ वृक्षाय स्वाहा॥ पंलांघं मुग॥ ४ ॥ ॐ वृक्षाय नमः॥ दत्तात्रेयमात्मनः शवथत्॥ धूप॥ विग॥ वरुण
 म॥ ऊजम॥ यूव॥ स्नान॥ यूडा॥ रुगुति धनिदू॥ वीदिता॥ सययी न वरुन॥ दीयसाधल॥ गडासि॥ अर्घल॥ जाय॥ ॐ
 शमास्यदाय स्वाहा॥ पंलांघं मुग॥ ५ ॥ ॐ वृक्षाय नमः॥ दत्तात्रेयमात्मनः शवथत्॥ धूप॥ कृष्ण॥ विग॥ श्री स्व॥ ऊजम॥ गाय॥ स्ना
 माय॥ रुगुतिसाधल॥ मधियूत्रिसाधि॥ म्वाव॥ वीदिता॥ सय॥ काल॥ अर्घम॥ दीय॥ धल॥ जाय॥ ॐ अस्माकमायः २६
 स्वाहा॥ पंलांघं मुग॥ ६ ॥ ॐ वृक्षाय नमः॥ दत्तात्रेयमात्मनः शवथत्॥ धूप॥ गन्ध॥ विग॥ सीन॥ ऊजम॥ दाक॥ स्नान॥ दाक॥
 रुगुति॥ वाक॥ मास॥ वीदिता॥ सय॥ वाध॥ रुम॥ मास॥ दीय॥ मा॥ म॥ दो॥ मल॥ विकं॥ सय॥ मा॥ वासा॥ अर्घन॥ जाय॥ ॐ वृक्षाय नमः॥
 वाय॥ रु॥ व॥ य॥ स्वाहा॥ पंलांघं मुग॥ ७ ॥ ॐ वृक्षाय नमः॥ दत्तात्रेयमात्मनः शवथत्॥ धूप॥ अ॥ गन्ध॥ विग॥ सर्व॥ गन्ध॥ ऊजम॥

सक॥खानसाक॥सुगुतिवाक॥मधिरिनि॥क्रीनसि॥वीदिन्वाक॥सद्यस्वभ॥दीपसाक॥समचिक॥अर्घमाडाक॥जाव॥ॐ
मृगप्रियायस्वाहा॥यंलांघंमुग॥ ६ ॥ॐॐकुदवगामासानंरावथग॥धूपवाल॥चिरु॥गवाचं॥जजमवाग॥खानवाग॥
सुगुति॥सामलजा॥मधिरूपि॥गडासि॥वीदिकावग॥सद्यस्व॥वावालस॥दीपकुलचिक॥अर्घमहिक॥जाव॥ॐआगिक॥
गवस्वाहा॥यंलांघंमुग॥ ७ ॥ॐॐजमदवगामासानंरावथग॥धूपकर्युव॥वीगणीस्व॥जजमगायू॥खानपन॥सु
गुतिधनियमधि॥चक्रि॥वीदिअरुग॥सद्यसिंहासन॥अर्घद्वन॥जाव॥ॐॐजमनदगय॥स्वाहा॥यंलांघंमुग॥ १०
॥ ॐॐ ॥थनवाहवलिविय॥ • ॥वलिसनंस्वगय॥वलिरु॥गुंनगांरावथग॥यंकाल॥वायूम॥कुलंवलसग
काकिकिगंलीलधन्वारं॥गदूपनिर्वकाव॥इग्निम॥गुयिका॥गंवरु॥किगंवरु॥गदूपनिर्वकाव॥वूलिकापनि॥गदूपनिज्वा

कालजागंवलिरुष्टु पंचामृतपंचगव्यसद्विगं॥ **ॐ** कूं औं औं खूं डूं वीरुगं पून ४६ कावयतनाग. ही कीरुगं तनसर्वीरु ४३
पीनयत्॥ **ॐ** कूं वज्रतनदवीरुगं द्वितीरावयत्॥ **ॐ** कावयतनाही तलं पून ४॥ **ॐ** अ ४६ वदनलक्ष्मीनामृतमानीयत्तेव
लीनविनयत्॥ गगालाकपालाकर्षण. मूढांदर्शयत्॥ अर्घ्याद्यादि॥ **ॐ** ऊं॥ यं लाघं सुग॥ ॥ वलिमाला॥ **ॐ** मदायति
सत्र॥ मदासासुसयमर्दनीं॥ मदासायूनि॥ मदाहीतवगी॥ मदासकानूसाविही॥ वृद्धावेवमात्माना. विद्यादवीमदावला॥ मागः २९
कीरुकृतिवेव. गानादवीगथाकुं॥ वज्रसंखलया॥ वेव. मदा॥ वेवगाग॥ वेवव॥ मदाकालिचदूतीथ वज्रद्वितीथ गथाप
ना॥ स्याहीव वज्रयाहीव. वज्रयाहिमदावला॥ वज्रमालामदाविद्या. गथेवामृतकृष्टुली॥ अथनाजिगामदादवी. कालक
र्षीमदावला॥ गथाधन्यामदारुगा. यमकृष्टुलिववव॥ पृथदकीमनिवृण. सुवर्णवाहीवयिगला॥ मदागजागथाद

[illegible]

यमोदये अर्घ्ययतिष्ठ स्वाहा ॥ यंलां घंस्तुता ॥ कुरुवर्धुमसाधना सकृन्नामरीषणीदूर्ध्वकरिवक्षादनीकाधवजीन
 माम्यदं ॥ २ ॥ पूष्यरागा ॥ ॐ आर्यमसामायूथे अर्घ्ययतिष्ठ स्वाहा ॥ यंलां घंस्तुता ॥ मदाह्वाना रुवाधवा ॥ इमव
 लुपराकन ॥ विद्यानाह्वीमदाह्वानंसायूनीप्रक्षामाम्यदं ॥ ३ ॥ मणिका ॥ ॐ आर्यमकानसाविष्णे अर्घ्ययतिष्ठ
 स्वाहा ॥ यंलां घंस्तुता ॥ वेदूथेसूकनिराहंमदनासूकविशमा ॥ काकार्षेदनीविद्यानसामिदिव्यूयानि ॥ ३०
 ४ ॥ मन्वा ॥ ॐ आर्यमदाहीतवथे अर्घ्ययतिष्ठ स्वाहा ॥ यंलां घंस्तुता ॥ यावृवकुंविसानाक्षिवकाशानूदासिनी
 ६ ॥ मवर्धुमसाधनीनमस्तुतगसागनी ॥ ५ ॥ ६ ॥ आदित्ययात्रत ॥ णिऊल ॥ का ॐ अक्षता ॥ ॐ नः
 मारुगवथ आदित्याय ॥ काक्षयगशाय आदित्यगर्गं संरुणाय कलिङ्गद ॥ रुवाय अन्वडासदिगा कर्क

टनयप्रनागवन्धुककुसुमसदृसरुगाः नकुवास नकुपुष्पगन्धयस्त्रायविनाय कुलं गवथसमावृढाय दवदा
नवकुंराकुञ्जाकिन्नाकिन्नसदिनाय अवगवश्चरावन्मनूयाणांदिनाथाय ॥ दंयदमधुलसध्वजूनययद्व
दमक्षक गन्धयुष्पयदीयायदान वलिक्क यतिगृह्णां नभारुगवगयस्यकियत कर्मगस्ययीतिकवारुवादा
नयतिअमूकस्य क्षाकियुस्सिंक्वक्षयिउमगस्यआदिशाय अर्घ्ययतिद्वस्त्रादा ॥ यंलांघंमुग ॥ नागसंरुवसंका
हायप्रनागसमूहवंसकावधवथमावृढं वज्रसूर्यनमामादं ॥ १ ॥ सां ॥ मतिशायूदास ॥ अथवाडादा ॥ डंनमः
शामदवाय ॥ अमृगारुवाय ॥ वंरासगाय वरसपूणाय धववपुष्यसदृष्टाय स्वीवसमूहवाय अश्वय (गागाय ॥ ६ ॥
कुवासकुक्कगन्धयस्त्रायदीनाय दंसमावृढाय दवदानवकुंराकुञ्जाकिन्नरुवसदिनाय अवगवश्चरावन्मनूयाः

ले
५

नांदिताथीय॥ ॐ दंगदमलुलमध्वजून्यविष्णु ॐ दमदकगंधपूषधूपयदानव. वलिच. प्रणिगृह्णानंमा ३ मु
गयस्याक्रियत. कर्मकस्यपीतिकवारुव. क्षाकिपूषिकुनू. वेष्मजन्मस्य. सामायजूर्ध्वपगिदखादा॥ यंलांघंमुता॥
दधिसंखुखानारंक्षीलादीननसकृदं नमामि क्षाणिनंददं. हंरुगंयक्षामामदं॥ २ ॥ मं॥ पूल. यल्का॥ ॐ नमारु
गवगजंभावाय. महादवपूनाय. पृथ्वीगर्भसंरुगाय. हृगुक्षसंप्रकालिगाय. नकवासनकपूषधूपगन्धयक्षायविनाय. ३१
अवत्यद(क्षारुवाय. शानदाऊ(भागाय. द्वागवथनूधाय. वरुधक्कुलदवताय. दवदानवकुम्भ. क्षाकिन्यकनसदिगाय
अवगनरुगवनमनूयाक्षान्दिताथीय. ॐ दंगदमलुलमध्वजून्यविष्णु. ॐ दमदकगंधपूषधूपदीयावदानवः
लिंच. प्रणिगृह्णानंमा ३ ग. यस्याक्रियत. कस्यपीतिकवारुव. क्षाकिपूषिकुनू. क्षणीयजन्मस्य. जंभावायजूर्ध्वपगिदखा

हा ॥ यं लांघं मुग्गा ॥ तं वाचना तिकातिव. क्षवश्चापिकवाकवं ॥ यमासनस्त्रिगं सोम्यं वादिगायनमाम्यदं ॥ ३ ॥ वृ ॥ श्रीका
॥ ॐ नमो रगवत वृधाय. ॥ क्षमसूताय. वादिहीयूताय. अर्कक्षालिषुकमहासहस्राय. सूर्यदेवताय. मधुदाक्षारुवाय. अ
श्वय. ॥ गाय. पीतयूय पीतगंधयस्त्राय विनयीयाय. कमलासमानुदाय. देवदानव. कंशाक्ष. वाकिनासदिगाय. अवगव
रगवन्मनूयानां दिगार्थय. ॥ दं गदमलुलम. ॥ ३ नृपवक्ष. ॥ दमकागंधयूय धूपावलिवं प्रतिगृह्णतानमामुग्गा
यस्य क्रियत. कर्मकस्य पीतिकावाम्यदं दानपरिष्ठा कियुस्त्रिकवृक्षे ॥ ३ नमस्य. वृधाय अर्घ्यं प्रतिगृह्णतानमामुग्गा ॥ यं लांघं मुग्गा ॥
तं वाचना तिकातिव. क्षवश्चापिकवाकवं यमासनस्त्रिगं सोम्यं वादिगायनमाम्यदं ॥ ४ ॥ वृ ॥ लृ ॥ गच्छ ॥ ॐ नमो रगवत
वृहस्पतये. अंगवसूताय. वरुधेदाय. देवतागुवायाधाय. काकेन वक्ष्ये. सिंधूदाक्षारुवाय. देवदानव. गंधर्वास्त्रवगव

ॐ कं रा छि किं न्य त व स दि गाय. अ व त न २ र ग व न् वृ ह स्य त य. स दि गार्था य. ॐ दं रा ह म ल म (ध) इ नू प य द् ॐ द म द ग गं
 ध यू ष्य धू या य दान व लं च. य रि गृ ङ्ग ता न् न मा इ मु ग य स्य क्रिय ग. त स्य पी ति क ना रु व. क्षा ति कू नू व न्न ऊ न म स्य वृ ह स्य त
 ति य अ र्घ्यं य ति कृ स्वा दा ॥ यं लां चं मु ग ॥ स प्र वा ना धि वा नू धं. क्षा त्वा न कां व न्ना य रां व ल य णा य मालि नं वा व स्य ति न मा म्यः
 ॥ ५ ॥ ॥ ॥ मू ति. क य गु लि ॥ ॐ न मा र ग व न् हु क्रा य. र ग सु गाय. सू रा या ध्या य. वे ना च न कू ल द व गाय. द धि कृ ष्ण सं २२
 का णा य. रा ग द (क्ष) रु वा य. रा ग व (क्ष) गाय. हु क्रा वा स हु क्रा यू ष्य धू य दी य य हा य वी ग यि या य. गु न गानू हा य. द व दान
 व. गं च त्वां सू न गानू ठ. कृ ण्ण कि न्न व स दि गाय. अ व त न २ वा स दि गाय. ॐ दं रा ह म ल म (ध) अ नू प वि ष्णु. ॐ द म द
 त ग ध यू ष्य धू य दी या य दान व लं च. य रि गृ ङ्ग ता न् न मा इ मु ग. य स्य क्रिय ग. क र्मा त स्य पी ति क ना रु व. दान य रि अ नू क स्य ण

किं नूप्रसिंच वृक्ष ऊ नमसा हुक्काय अर्घ्यं प्रतिच्छेत्वा दा ॥ पंलाघं सुग ॥ नानामासु ससमंदवं हुजारुदुवं गासनं ॥ यस्मिन्
वापि दुस्तं वदानवंगुन नमाम्यहं ॥ ६ ॥ ॥ ॥ नमसासु नमो निश्चयाय आदित्य पूजाय द्याया गुरुसंरुताय यम
सागाय नीलवर्णाय उविनद (हा रुवाय कृष्णवधनूतय अक्षाय दवताय नीलवास नीलपूषा गंधधूपदीपयस्त्रा
यविताय दवदानवगन्धर्वोत्सवकुंसाक्षुकिनी सदिताय अवतारशरणावनूदानयि अमृकदिता र्थाय ॥ दंगदमधुल
सध्व अमृपविष्णु ॥ दमका गवध पूषा धूपदीपाय सनं वलिं व युतिगृह्णान् नमोऽस्तु तयस्य क्रियत तस्य प्रीति कवा
हव दानयति अमृकस्य ॥ किं प्रसिंच वृक्ष काष्ठय (गागाय ॥ ६ ॥ ऊ नमसा हुक्काय अर्घ्यं प्रतिच्छेत्वा दा ॥ पंलाघं सुग ॥
नीलारं गीह ददं कर्मकाय समाकर्म ॥ वसिष्ठा विमं निरुक्क कृष्णवर्ण नमाम्यहं ॥ ॥ ॥ ॥ नाना नाडावगन्धा ॥ ॥

ल
न

उं नमः नादव. सिंदसू गाय अमृग पियाय. कृत्ती (६) नदव गाय. मलयदा (६) रुवाय. कुरुवर्क्षाय पार्थि (६) गाय कुरु
वास कुरुयुषधूय दीयंगान्धयस्तुय विगपियाय. भयनथनूदाय. दवदानवगान्धर्वोत्तनगानूकंराक्षकिनीसदिगा
य. अवरुनशरुगवन्दानयलिदिगार्थाय. ॐ दंगदमलुलम (६) इनुय विष्णु. ॐ दमदगगान्धधूयाय सानवलिनं
प्रतिगृह्णतान्. नभाइस्तुगयस्य कियतगस्य पितिकवारुव. दानयलुक्षा कियुसिंद्व. ६५५ रुमस्य नादव अर्थेयः ३३
किच्छस्वादा॥ येलोचंस्तुति॥ द्विजमिगसुसंस्तानं मानवानां रयंकनं॥ यामसुं मर्चकायाश्च विधूयुं दनमास्यदं॥ ६
॥ क॥ कल. कावात॥ उं नमः ककवका गसू गाय. कालया (६) यगदकाय. त्वमकुलदवाय. धूमवर्क्षाय शीयव
गद (६) रुवाय. अमृग (६) गाय. धूमवासधूसयुषगान्धयस्तुय विगपियाय. धूमनथानूदाय. दवदानवकुरुक्षु

किं निसदिगाय. अत्र नरशरुगवन्दाक्षपदिगार्थाय. ॐ दंगदमल्लमध्वजूनप्रविष्ण ॐ दमदगययधूपदीः
धापदानवलिक. प्रगिरुङ्गानं नभाइरुगयस्य कियत कर्म तस्य पीनिकवाह वदानयरुज्जमकस्य ॥ निपुसिं कनू सूद
ऊमस्य. कतवज्जुयपिहसादा ॥ पंलां घंरुग ॥ स्वभयाहाकवयगुं. कायापूहुरुषनं ॥ विविगविगदसारं थानिकरुन
साम्यहं ॥ २ ॥ ॥ जगद्वन. अद्वत ॥ ॐ ऊमनऊमन दगदवगाय. वेवाचनकुलसंरुगाय. सथीसनायविष्णाय ॥ ६ ॥
नवर्ह्याय ॥ ६ ॥ वासवययधूपदीयगन्ध. यल्लायविगाय. दवदानव. कंराभाकिनीसदिगाय. शागाद ॥ ६ ॥ रुवाय. अत्र
नरशरुगवन्. दानयरुदिगार्थाय. ॐ दंगदमल्लमध्वजूनप्रविष्ण ॐ दमदगगंधययधूपदीधापदानवलिक. प्रगिरु
ङ्गानं नभाइरुग. यस्य कियत. कर्म तस्य पीनिकवाह व. दानयरुज्जमकस्य ॥ निपुसिं कनू. सर्वदवसादवतासवीथ

कथियऊ नमनस्य ऊ नमदवगाय अर्घ्यं किं च स्वाहा ॥ यं लां घं सुता ॥ शुभांशवृक्षसंका हां सर्वदवनमस्तु गां सर्वाय सर्वद
 वानां ऊ नमद^व नमाम्यहं ॥ १० ॥ ॐ ॥ मिमलुदयक ॥ ७ ॥ ॐ ॥ न नैषात्यकानस वस्त्रसंदय ॥ स्वस्तिकसस्त
 न गुनमधुलदनक ॥ वलिखानतन्या मटयूजा ॥ वलिविसऊन ॥ विषाखावना ॥ निलाऊन ॥ लाहागिनका अविनंगा
 दिग्वयडथां ॥ साछालिमिवानगाय साछयक ॥ लिमिवाजांका अद्रवालधनक ॥ मासकक ॥ नोयाहसूयूजा ॥ लसिधंका डकथा २४
 सगसां ॥ अवनसामनं ॥ माद्रूपक ॥ लाहासगसां ॥ पिवसमूडया लवनलूय ऊडालं वगायाडा ॥ आचार्यं हां खलख नाकादि
 या कस्य ॥ अवनान ॥ हां कं खानासवाठ ॥ पंचगंध ॥ पंचामृता ॥ सिऊ खानासवाठ ॥ पंचाषधि ॥ पंचवल्क ॥ डसी डालगसि पि
 लासि ॥ इंदवसि ॥ अय्या ॥ धनिठनसग ॥ अवनसग ॥ सर्वकर्मिक कलहनलां याचक ॥ पिडासमूडया लखं हायक ॥

ल
क

कसलंखादि॥ ॥ यं वगंधनक्तसव्यक॥ ६० वरुसुगन्धगिनकअंगलयनायखादा॥ ॥ नखाचिकनंदयक॥ ६१ व
रुसुगन्धनेलजंगलयनाखादा॥ धमिधूनकाडाथडाशथाससंगय॥ यं वगयवियायगिलं नक्षवविगालि गायकस
गिसादकाविथ॥ नूचिगजधिसानयाय॥ स्वसिवाक्कगिचक॥ ॥ धनलि॥ नवगुददानवियक॥ ७ ॥ वि
य॥ आदित्य॥ स्वां॥ मावासा॥ आदित्यायकाधयगागायअगिगारुसंरुगायअमिगारुकलदवगायदानयलिअम
कअयूनाभग्यकामनार्थसर्ववागायुक्षांयर्थनऊगघटिगव्वंदनकाधनूगुख्यंमर्कसंप्रययद्यम्यदांधनूपगि
सुर्थसंप्रदाययामि॥ मावासाविदानविडाकयूजा॥ ददक्षा॥ १ ॥ सा॥ शायूताम॥ वां॥ सामायदीवादीवहु
वसंरुगायविष्वदवगायअमूकस्य॥ ६२ निर्थ॥ नऊगघटिकं॥ वां॥ वं॥ गुख्यंमर्कसंप्रययद्यम्यदां॥ वां॥ वं॥ सुदक्षिणां

प्रतिसाधार्थसंप्रदाययामादं॥दक्षिणसंख्यपूजा॥ २ ॥अं॥प्रकाशसा॥अंगनायरुमीसूताय॥शिवदवगाय,दान
 परुअमूकस्य॥सांख्यार्थनरुनघटिगअनघान्दुखंममं॥संप्रयच्छामि॥अनघान्प्रतिसाधार्थदक्षिणसंप्रदायकयामादं॥दक्ष
 णाप्रसापूजा॥ ३ ॥वृ॥श्रीकालवृक्षयशामसूताय॥दिनीयूगाय,वृधदवकाय॥अर्कक्षालिगुकमहासदृक्षाय॥
 सूर्यदवगा,मघदाक्षारुवाय,अगय(गागाय,दानपरुअमूक॥सांख्यार्थनरुनघटिगअनकसुवर्द्धुखंममं॥संप्र ३५
 यच्छाम्यदं॥सुवर्द्धुदक्षिणप्रतिसाधार्थसंप्रदायकयामादं॥दक्षिणलपूजा॥ ४ ॥वृ॥गच्छपीतवसु॥ल॥वृद
 स्यतयरुमिसूतसूताय,वदुर्वदाय,दवानांयाध्याय॥अक्षारुदवगाय,दानपरुअमूकस्य॥पक्षार्थनरुनघटि
 तपीतवसुसुवर्द्धुखंममं॥संप्रयच्छाम्यदं॥दंपीतवसुदक्षिणप्रतिसाधार्थसंप्रदायकयामादं॥दक्षिणपीतव

ले
 न

[illegible]

[illegible]

ॐ नमः स्वस्ति कसमान ॥ ॥ रावना निलांजन गात्रा मगरुं च य मरुं वृया ॥ धनलि चंद्रविं वृजडा वादा रं जांक ॥ सूर्यः
विं वृजडा नान रं क ॥ धनलि आनदा सायायिन पाता सत जू मंगल वाय ॥ ऊव क गन ॥ धनलि आनदा साया दडान हि
लय गिल्व क्षा नय ॥ धया धान का धि ॥ धया धान नथ नय ॥ ॥ धनलि रिगु वना स स्वस्ति वाक्क यदयं नथ स दजाय क
॥ लिरुल साच कं रु क रु क गाहिन गात्र क नाकन ॥ धनलि सुवला स सिगलान सिधु दाय गुनू न ॥ धनलि रुट सान दि
॥ मरु सा दार्कि ॥ थुलिं मरु सा १० ६ दाहाल स्वां डा साया गु ज्वा या ना क गिल स द्वा क ॥ वाक्क ॥ डं न भार गव ल स च
गला क य गि ॥ डं डं डं डं डं (ॐ धय श वि (ॐ धय श स म सान वरा स स न ग ग ग स रा व वी हु च डं डं डं व वि ऊ या य वि
हु च अरि वि क स र्व ग था गत डं अ ४ द न श आ यू संधान जी (ॐ धय श वि (ॐ धय श ग ग ग स रा व वि हु च ॥ स स स ल हि

संवाधित सर्वगथागगावलाकिनी पद्यानमिगायत्रिपूत्रणी ॥ दक्षरुसीयगिष्ठिग सर्वगथागगदयानाधिष्ठानां
धिष्ठिग ॥ ॐ मूद २ मदा मूद वज्रकायसंदवग सर्वकर्मावनक्ष यतिनिवरुय सर्वगथागगसमयाधिष्ठिग ॥ ॐ मूनि २
मदा मूनि विमूनि ॥ ॐ मति २ मदा मति समति गथगारुणकाटियनिष्ठुवाविह्व वक्ष ॥ ॐ द २ जय २ विजय २ सन २ सूत्र
ल रुत्रय २ सर्वमूदानां धिष्ठिग ॥ ॐ ह्रु २ वृद्ध २ वज्र २ मदा वज्र वज्रगारो जयगारो वज्रकालागारो विज्जारुव वज्रकाला २ ॥
संरुव वज्रवज्रिणी वज्ररुवकु ममहावीरं सर्वसत्त्वानां च कायपविष्ठुच्चिंद सर्वगतियत्रि ॥ सर्वगथागगा (श्रमां) ॥ ॐ
वृद्ध २ सिद्ध २ विधाय २ विवाधय २ भावय २ विभावय २ (हा) धय २ वि (हा) धय २ समस्तान्भावय २ ॐ मूद २ मदा मूद
मदा मूदा मदा मकु पदखाता ॥ संपूर्ण पूर्य सदसंवा दक्षरुसंवा जूक्षरुवहारं वा दक्षरुवयगाक पृथधूय

दीपगंधनेवशादि सर्वपूजारिः पूजयः ॥ मांसस्त्रिंशत्सक वर्ष सकादिनां ११ सदसुवद्वर्धनार्थं च दूर्वाकुण्डादिकल
जासहितं ॥ ॥ दसाधयजयकनिः ऊयवतिः तिस्रश्शरावन् रगावति समयमनूयानय सर्वगथागत दयक्षुब्ध
वशाकयः अष्टदानुषरयस्य ॥ सर्वसांयत्रियूनयः रुयस्य ४ मसारयस्य ४ ऊँजा ४ हंखादा ॥ ० ॥ धानगुलिंदा
नखानः दण्डलीयस्य ॥ स्नानं च वक ॥ ॥ धनः कायः च यः च यनः बूलगस्य अर्घ्यावकः स्नानगंकः पूजा
याकः पणायकाय दन्तप्रतिपाठय पूजायाकः स्नानतनक ॥ ॥ धनवक्षजायाय स्वस्तिवाक्यस्य यरुः मधु
लस्रवाङ्मक ॥ धनः नथदयं गुन्यास्त्रासगय ॥ धनदवताहतिविष ॥ ॥ धनज्वाहविष ॥ ॥ हंखाहतिविष ॥
॥ हीमूवातादसाः मालकीजादिनः सकतां नडाका विधिथां हि काहति ॥ ॥ धनमहावलि विष ॥ वलिमालायस्य

[illegible]

वी

समूह्यादिना. नाचन्दयुवमध्यवीरगावगीसर्वार्थसंपत्कवी ॥ ॐ आ १ हूं ॥ सर्वसत्त्वधनदाहता. प्रतिसवामात्मानं शावय
॥ दक्षिणदक्षिणकालनसूर्यमधुलं ॥ वामदक्षिणकालनचन्द्रमधुलं ॥ कलजायां हूं कावहायं वक्षुविकवक्षं विरा
व ॥ ॥ कमलावलनहं स्वाधिसानं ॥ ॐ मणिधनिवजिणिमहायगिसनहं २ रु २ स्वादा ॥ ॐ सर्वविघ्नहानय
हूं ॥ ॐ वज्रयुधस्वादा ॥ यथाधिसान ॥ ॐ अकारामूखासर्वधर्मानां ॐ आ १ हूं रु २ स्वादा ॥ वलयाधिसान ॥ ॐ आ १ हूं वक्ष
२ रु २ स्वादा ॥ ॐ हनमनक्षहं ॥ ॐ थागमनक्षहं ॥ ॐ आत्मानं सवक्षहं ॥ जंगन्यास ॥ ॥ नृगखदयजुका
वक्षवक्षमधुलं ॥ नस्यायत्रियंकारं. गदस्मिनागुवृवाधिसत्त्वादिनां ॥ अवरासासत्त्वार्थकत्वा ॥ अकनिकुरुवनं
गत्वा. महायगिसनायमूखादिनां. सगहायत्रिवागान्. पुनगागगनपद. हादृष्ट ॥ आकर्षण ॥ ॐ वज्रचक्रहं

॥ ॐ वज्रं कृष्णं ॥ ॐ वज्रपादं ॥ ॐ वज्रसूतं ॥ ॐ वज्रावहादा ॥ ॥ अथोदि ॥ ॐ अ॥ दी॥ यं वनयेय
वसत्कानाय अर्घ्यं प्रतिदत्त्वादा ॥ ॐ अ॥ दी॥ यं वनकायेय वनसत्कानाय पादं प्रतिदत्त्वादा ॥ ॐ अ॥ दी॥ यं वनका
येय वनसत्कानाय आवमनं प्रतिदत्त्वादा ॥ ॥ पूषा न्यास ॥ ॐ मणिधनिवज्रिणिमहापतिसमस्तं २ रुद्रं २ स्वादा
॥ ॐ विमलविष्णुं जय वनजुमृगविज्रं २ रुद्रं २ स्वादा ॥ ॐ रुद्रं २ सं रुद्रं २ ॐ त्रिय वनविष्णुधनिव्रवले २ रुद्रं २ ॥ ३९
॥ ॐ कालीय स्वादा ॥ ॐ कालनागीय स्वादा ॥ ॐ कालकर्णाय स्वादा ॥ ॐ ध्वजाय स्वादा ॥ ॐ वज्रं कृष्णाय स्वादा
॥ ॐ वज्रपाणीय स्वादा ॥ ॐ वज्रसूताय स्वादा ॥ ॐ वज्रावहाय स्वादा ॥ ॐ गन्धर्वस्य १ स्वादा ॥ ॐ कुरुक्षेत्रस्य १ स्वादा ॥ ॐ
नागस्य १ स्वादा ॥ ॐ यक्षस्य १ स्वादा ॥ ॐ मध्याकानाय स्वादा ॥ ॐ ह्रीं तां सव स्वादा ॥ ॐ नकां गकुमानाय स्वादा ॥ ॐ वृधाय

स्वादा॥ उं हा गा स्या दा य थ स्वादा॥ उं अ मू ना ग मा थ स्वादा॥ उं रु ह्म व ळु थ स्वादा॥ उं अ मृ न पि या थ स्वादा॥ उं जा ति क त व
स्वादा॥ ॥ उं रु छि का थ स्वादा॥ उं ना सि णी थ स्वादा॥ उं मृ ग सि ना थ स्वादा॥ उं जू पा थ स्वादा॥ उं यू न र्वे ष्व स्वादा॥ उं
पू श्रा थ स्वादा॥ उं अ ल्ल वा थ स्वादा॥ उं म द्या थ स्वादा॥ उं यू र्वे रा लु णी थ स्वादा॥ उं ड रु न रा लु णी थ स्वादा॥ उं द स्मा यः
स्वादा॥ वि णा थ स्वादा॥ उं स्वा र थ स्वादा॥ उं वि षा था थ स्वादा॥ उं अ नू ना धा थ स्वादा॥ उं मू ला थ स्वादा॥ उं यू र्वो वा छा थ स्वाः
दा॥ उं ड ऊ वा छा थ स्वादा॥ उं अ रि चि थ स्वादा॥ उं ह्र व णा थ स्वादा॥ ✕ क्ष रा थ स्वादा ✕ उं ध नि षा थ स्वादा॥ उं ह नः
व षा थ स्वादा॥ उं यू र्वे रु डा थ स्वादा॥ उं ड रु न रु डा थ स्वादा॥ उं न व नी थ स्वादा॥ उं अ ख नो स्वादा॥ उं र न नो स्वादा॥
॥ उं ॐ डा थ स्वादा॥ उं य मा थ स्वादा॥ उं व नू णा थ स्वादा॥ उं कु श ना थ स्वादा॥ उं अ गु स्वादा॥ उं ने पा थ स्वादा॥ उं वा

यद्यस्वाहा ॥ श्रीगणेशाय स्वाहा ॥ ॐ वक्राक्ष स्वाहा ॥ ॐ पृथिव्य स्वाहा ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥ यं लो घं सुग ॥
यत्तिसवनमसुखं सर्वसंपत्तिदायि ॥ ॐ वक्राक्षे नमः ॥ वक्राक्षे नमः ॥ १ ॥ कुरु वक्राक्ष मदाधा
ना सकृद्वशीषशीषणी ॥ दूदो कश्चिद्वशीषणी ॥ काधवज्जीनमाम्यदं ॥ २ ॥ मदाक्षना रुवायवी दमवर्षपराव
नी ॥ विशाखा ह्रीमात्मानी मायूरी प्रणमाम्यदं ॥ ३ ॥ चान्वक्राविसालाक्षी वक्राक्षी वक्राक्षी ॥ यमनामा ॥ ४ ॥
क्षायवी नमस्कृत्य गता गता ॥ ४ ॥ वेदूर्यो हुकानिरोसा मयनात्सु कविशमा ॥ काकाक्षे दनीयवी नमामि ॥
गवती ॥ ५ ॥ पापदहना ॥ कुरु मनूभायितमकुशलमवशतमयार्थं काविगं यच्च गत्सर्वमशुद्धाधेयुनगश्य
तिदक्षयामि ॥ अधूना सकृद्वशीषणी ससुगता गता नाममाधगां शीवसकृद्वज्जीनमाम्यदं ॥ ॥

तदनकनं॥ मेरी कनू मदिनायका. वरुवम विहानां रावयत् ॥ ॐ स्वरावधुचा ४ सर्वधर्मोस्वरावधुचा ३६ ॥ ॐ
न्यातां हानवकस्वरावासाकादं॥ यनंलं वं सँकावकाकनावलं. दीयसमूदवकादयनिवर्गं॥ वंकावकासूर्यमधुलं
दूयनिज ४ विष्वाहानिकिनल. वरुसुमिवकाकाकनं वरुयकन वरुविहानं रावयत् ॥ तदूयनिजं कावकाग. वरुव
सं. वरुदानं. वरुसुमन ५ पुसककः साशिरं. कृतांमनरावयत् ॥ तस्माधयंकावकाविष्वाकं. तदूयनिजिगाविंवं
स्यायनिलं कावकावका. णिगासुमवकावयत् ॥ सवकाविहानयनिनयाविष्वांराकं. तस्यावकायथकननिषक्षिणा
वरुमस्वा॥ दकिहकसु. पृथ्वीगा. वामदविनामवराक्ष ॥ दकिहयथमरुऊनमसुमवका॥ दिगीयनवकं. एगीः
यनसवं. वरुथेनस्वमं॥ वामयथमरुऊनमरुनीयाहं. दीगीयनणिगूलं. एगीयनधनं. वरुथेनयनहं॥ तस्य

मूर्ध्नि सर्वो लंकालरुषिगं सिंहा नूटासुं च वंरुगां महापति सनां रावथत् ॥ स चैव विष्णु न विन्दु ह्मं कानवीरु
 यत्रिनामध ॥ महासाहस्यमर्दनी रुषुवर्धुं यिं (मार्च) ह्मं के. नवकपां रुरुगसवानूटं. रुरुदुटी दंष्ट्र कनालवद
 ना. ललिताश्चाथन महारुजय कना दस माक्रम्य माता ॥ कुलकयूनमुकाहान नो यूनरुषिगा ॥ अरु रुजादक्षिण
 यथरुजनवनद. दिगाथनां कुक्ष. रुगीथन धनं चरुथेन खञ्ज ॥ वामयथमरुजन गङ्गा नी वरुयाहं दिगीथनय ४१
 नहु रुगीथनधन. वरुथेन यथायत्रिखञ्जनलं ॥ गस्यामूलमूर्खं रुसुं. दक्षि (ह) विष्णु. दृष्टयान. वामदक्षिण पति
 मूर्खं गिनतं. नाना लंकानरुषिगधारीनं. महाबलयनाक्रमा. नोदवेषा. च वंरुगां महासाहस्यमर्दनी रावथत् ॥
 ॥ दक्षि (ह) विष्णु रुयथायत्रिचद्रमधुलमधु मं कानवीरुयत्रिनामध. पाटिति महामायूनी. पीतवर्धुं सेवेयर्थ

किनीं शिखरां शिखरं अश्वानुहं अश्वरुजां नलमकुटीनीं सर्वोलंकालरुषितां दक्षिणायथमरुजुनवनदक्षिणीयनवः
नक्षत्राघटं हृत्तीयनवकं चतुर्थेनखजं ॥ वामरुजयथवागपविशिशुः क्षिणीयनमयूरीहं हृत्तीयनवदयविविधः
वज्रं चतुर्थेनवलधजं ॥ ॥ मूलमूलं पीतं दक्षिणरुषं वामनकं ॥ यवं रुगां मलमायूरीं रावयत् ॥ ० ॥ यश्चिमविः
ध्वयभायविसूर्यमधुलमध्वः गांकाववीजयनिनामजां मलमकानुसाविहीनकवर्धुदादशरुजां शिखरां शिखरां ॥ मू
लमूलं वकं दक्षिणरुषं वामलादिगं दक्षिणवामरुजुनधर्मचकमदां क्षिणीयां समाधिमूदा हृत्तीयनवनदचतुर्थेनअ
रुययकभनवजं वज्रनक्षत्रं ॥ वामहृत्तीयनगर्जनीवज्रयाहं चतुर्थेनयभायविकलहं यं वमनवलरुगा वज्रनधन
अर्धयथैकनीं नलमकुटीनीं सर्वोलंकानरुषितां नवथोवनयन्ना हाननोयूनरुषिता कुरुनालं रुगीं यतामलमकानुसा

क
दि

वर्णीरावरावथगु॥ ० ॥ उरुत्रविश्वपभापनिचन्द्रमधुलमाध्र. हांकाववीरुजार्ग. मदाहीरवर्णी. गवूज
सनसुं. सुनिगवधुगिनगामिमुखं. गथागामकृतिनी. खरुजासूलमुखं. सुनिग. दक्षि. (हा) सु. वाभनकंद.
द्वि. हा. यथमरुजमुख. दिगीयनवर्ज. रुगीयनहारं॥ वामयथमरुजमुखं. नीवजयाहां. दिगीयनवलध्वजं. रु.
गीयनधनं॥ सर्वालंकावरुषिगा. मदाहीरवर्णीरावथगु॥ ० ॥ अ. प्रयका. (हा) विश्वहाभाजसूर्यकालीकृष्णकः ४२
नास्यांकलितकंवू॥ नै. प्रयविश्वहाजवन्दकालनायिगीगा. पाणिस्थांगुदितवर्जांकीरध्वजं॥ वायथांविश्वसभाजसूर्य
कावकछिन्नकादस्तास्यांगुदीतयवहूं॥ श्री. हा. न्यांविश्वयमवन्द. (ह्य) गा. दस्तास्यांगुदीतगिहूला॥ यगावगभावरुय
थैकीर. नलमकुदिनी. गिनगा. नवथावनयगांरावथगु॥ ॥ ५ ॥ हागा ५ पूर्वदाभर्जकावर्जा. वजांवध्यास्यां

मंजुवर्णं कदम्बं रुजं ॥ यथा वनसु विष्णुपद्मसूर्यसु वज्रपथं किनीति नगा ॥ नवधा वनमहितां विधिना
नलारवर्णं रावयत् ॥ ॥ पूर्वविदददवदहीया विविधधवनर्त्तुर्वि. दहासागचर्चो ॥ ऊर्ध्वदीपनाक
ससहानानाविकटवर्णं रुक्मकृष्णं ॥ जूयन (ग) गायिनीथरुष्णककससका. नानावर्णलंकानधानि (लम्भाः
नागा ॥ ॥ उल्लवकनूयकनूया. नानावर्णानि (लम्भा) क्ववना विरावयत् ॥ ॥ गददिजुसुपु. पूर्वस्यां दिशिः
सफाब्धवथसूर्येन कवर्त्तुः ॥ सर्वकनार्यां हानाधनं द्विरुजं ॥ कस्य नो भद्रं सानूहासाम ॥ सद्यतनकनार्यां क्वमूदधः
व ॥ ॥ जू (न) या रुक्म नूहा मंगलान्तादिगवर्त्तुः. सद्यकर्णनं. वामनमूला लारिनथ. दधाना ॥ दक्षिणपद्मानूहः
पीतवर्त्तुः सवर्णनाधना वूध ॥ ॥ तेषां गजानूह वृहस्पति. (गो) ववर्त्तुः नक्षत्रमालाकमधुलूधना ॥ ॥ पश्चिमस्यां

[illegible]

[illegible]

मृगवाहन. ध्वजधरा. वायू ४॥ ॐ ह्रीं न्यां वृषासनादिना. शिखूलकया लघनं ॐ ह्रीं न्यां ॥ अस्य वामपा. ह्येदं ह्रीं न्यां ४
पीतावरुर्मूर्खा. रुद्रा. मूक. सुगह. कवायां रुद्रा. ॐ ह्रीं न्यां. दधु. कमं. उलू. धनं. वक्रा. ॥ नैमल्य. वनू. हा. थाम. ध. पी. त. व. मू. थो.
वनालंका. न. व. गी. क. न. क. कूं. रा. द. सा. व. संध. ना. ४॥ तस्या. वामपा. ह्येदं ह्रीं न्यां. म. ४. क. न. कालं. का. न. वा. नू. ह्व. न. रु. ट. क. ध. ना. व. म. सि.
गा. ४॥ प्र. वं. रु. ना. स. म. ह्यु. ल. या. न. रा. व. थ. नू. ॥ ॥ त. ना. अं. ग. न्या. स. ४॥ ॐ. अ. ४. हूं. स. ४. स्वा. दा. ॥ प्र. व. द. श्यां. ॥ व. (ह्रीं) ग. थ. ४४
४॥ मं. द्या. न. थ. ४॥ गं. व. का. ॥ जौ. स्य. (ह्रीं) ॥ त. ना. द. द. थ. रु. ॥ प्र. का. न. ल. ह्रीं. नी. मा. ला. क. धा. रु. रु. वि. ला. ह्रीं. न. स. त्वं. स. म. य. स.
त्वं. की. न. ती. न. नि. व. स. म. व. सी. ल. गं. दृ. रु. ॥ ॥ अ. रि. ध. कं. थ. थ. य. न. ॥ अ. रि. धि. ॐ. गु. मां. स. र्व. ना. थ. ग. ना. ॐ. ति. ॥ य.
था. दि. जा. त. ना. गु. थ. दि. ४॥ अ. रि. ध. का. न. वं. वे. ना. च. ना. दि. न. कू. टं. स्व. सि. न. सि. व. र्जं. दृ. रु. ॥ ॐ. प्र. ति. स. ना. स्व. रा. वा. ल. का. हूं. ॥

आलिंगनमूद्रा ॥ आकर्षणपूजा ॥ यं लांघं सुग ॥ जननी सर्वसत्त्वानां सर्वलाकवकाविही ॥ यंचनकानमः ॥ स्यामि सर्वसः
त्वार्थसिद्धयत् ॥ नवगहनमसुखं सर्वसत्त्वपदायित ॥ यथासंभाषमाणनसत्त्वानां जायते हरं ॥ अष्टविंशतिनकना
सकसकदिशिस्तिगा ॥ तानमस्यामि वैशक्ता सर्वला ॥ यसां गय ॥ लाकपालं नमस्यामि दिग्बिदिशुवावास्तुगा ॥ यथा नः
काविधानतनसत्त्वामुसुखसर्वदा ॥ ॥ गगाललाटककुहसु ॥ हितनकाहिगान् ॥ ॐ अ॥ हूं कावाननिविक्षयत्
॥ गियावत् ॥ यं रावयत् ॥ गगानायिताकृत्तुवीरुकिनक्षमालिकंथाकृष्य पूर्वकागगहस्त्रायितं समयसत्त्वमष्टु
लं ॥ छिदं ह्यनसत्त्वमष्टुलमवलाक ॥ अर्घोदिपूजायं लांघं सुग ॥ जाय ॥ पूर्ववत् अर्घोदि ॥ पूजायं लांघं सुग ॥
॥ गगावलिरावता लखतस्यं ॥ वलिराहुं ह्यनतां रावयत् ॥ ॥ यं कावक्षो यमधुलं वनत्यकाकां किं ॥

का
ह

[illegible]

विद्या. गणेशो मन्त्रकृष्णली. जयवाजिनामदादवी. कावकली मन्त्रावला. गणेशधन्यामन्त्रावला. पञ्चकूष्मलि
वद. ॥ पूष्यदंती मन्त्रिदूता. सुवर्णकली वयिंराला. ॥ मन्त्रावला गणेशधन्यावद्विदूमा लानि. ॥ वाकसक
ऊगाचेव. वृद्धा ४ दिगी कनायकनायिका. ॥ ॥ गणेशधन्या. ॥ कालिकनालि. कृष्णालि. ४ दिगी. कमलादि ता
निगीहानिकहि. धीमतिद्विपिंराला. ॥ लं वयल श्वकाल पाहिकल. ॥ ॥ दनि. ॥ यमदूती यमलाहिसि. ॥ ॥
रुणसनिपतिश्चमं. ॥ गणेशधन्या धूपं वलिदास्यामि. नकाकनूमससर्वसुखानां व. ॥ सर्वोत्थापदवस्य ४ जीवंतु
वर्षे ४ गंय ४ रुसुवदा ४ गं. ॥ सिध्दुरुमकयदा ४ दानपरिजुमूकस्य योश्चिं कनूखादा. ॥ पूषं लां चं सु. ॥ ॥
कल सग्वं मन्त्र. धूनि आदिंयूजा. ॥ दवमलुलपूजा. ॥ मलुलथिल. स्वां गन. ४ गणेशधन्या. ४ रुनिर्वो. ४ सग्वं ग. ॥

क
उ

दक्षिण विसृज्य नक्षत्रावतः ॥ कर्ता वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥ यंचनकामधुलसुखं विसृज्य न ॥ ॥
॥ गिरिपंचनकायूजाविधिसमाप्तः ॥ ॥ ७ ॥ ॥ नवग्रहयूजाविधिः ॥ ॥ कलसम्बन्धयंचनकायूजः ॥ अ
पूर्वाह्नवलागिधुः ६ वाग्वत् ६ यंचनगंधः पक्षमृगः यंचनगंधः यंचनगंधः पक्षमृगः ॥ लक्षितः यूजाअंगुलिः ॥ असंख्यदि
तागाडंकायः ॥ गोमाचनः नकिलिः ॥ सप्तपायाः रुडावलियागा ॥ नाहवलिः ॥ साकुरुगा ॥ साकुरुगा ॥ नाहयामगंधयिता ॥ ४६
॥ धाति ॥ कोमानी वलिरुडाया ॥ आडंरुगा ॥ आडंयगा ॥ ॥ ॥ ॥ नयाग रुडाया ॥ साकुरुगा ॥ साकुरुगा ॥ ॥ वाचि ना दासी
धतिथायनः यंचनकामधुलथायनायायसमखनः ॥ ॥ यंचनकामधुलयूजाविधिः ॥ सद्यदानविधिः ॥ ॥ ॥ ॥
लंखवलिः यंचनगंधसाधनः सिधुगयः मधुलथिलकः ॥ सीसमाधिः यंचनकायाधः ॥ कलसम्बन्धनकिनिः ॥ मामकि धातिः

विधिध्वं पूजा. महलंद वंत वगदं धति पूजा ॥ ॥ पति सनाया नऊ नायू नल दन. ऊऊं स्नान गायू धूप कर्पूव ॥
चित्तोत्थ ॥ रुत पीयंगु ॥ मधि वन वरु ॥ दीप धल ॥ दक्षणा डाहाया वरु. उगुति दूद. ऊर्ध्व दन ॥ १ ॥ मसदा सुः
वमर्द निया ॥ नऊ कुरु नल नील. धूप कुरु नी ॥ चित्त डासि गुनि ॥ ऊऊं मस्नान साक ॥ रुत गुम मसी ॥ उगुति वाक ॥ मधि
वयनाधि ॥ दीप सायिता. सामल विकं ॥ दक्षणा डाहा विंवऊ ॥ ऊर्ध्व नील ॥ २ ॥ मसदा मायूनीया ॥ नऊ यथा ॥ नल प
थनाग ॥ धूप यंवगंध. चित्त कंकम. स्नान गायव रुत. किमसी. उगुति. कसि. धनि. मधिवल्लति. दीप ययी डायीकाः
विकं ॥ दक्षणा डाहा. विनल ॥ ऊर्ध्व. पृथनाग ॥ ३ ॥ मसदा वरितिया नऊ वादू ॥ धूप मीन ॥ चित्त वूडा ॥ ऊऊं स्नान. डाव
नल मल ॥ रुत तडासि. उगुति वाक. मधि नानी. ऊर्ध्व मव ॥ ४ ॥ मसदा मरुतान सावणीया. नऊ कादू ॥ धूप कक्षनीच

का
३

ननकवदन ॥ ऊर्जस्वान्कादू ॥ नलनूगुनि ॥ रुलकालाजंवीरुगुनि ॥ साधनसधिमथ ॥ दीयनकपकाविकं ॥ दक्ष
असाविंयम ॥ अर्घककटन ॥ ७ ॥ धदासैमैअर्थथनसिजनया ॥ ॥ आदित्यया नऊकादू ॥ धूपकंदव
चिगकंकुम ॥ ऊर्जस्वान्कादू ॥ रुगुनि ॥ कालजा ॥ रुलमीकसी ॥ मधि ॥ धावाय ॥ दीयल्काविकं ॥ दक्षविंमावासा ॥ अ
र्थसिजल ॥ वीदिसांडा ॥ १ ॥ सामया नऊठुयू ॥ धूपकंददा ॥ विगकपून ॥ ऊर्जस्वांठुयू ॥ रुगुनिधनि ॥ रुलमक ४
सी ॥ मधि ॥ मधि ॥ अर्घयागडाया ॥ दीयठुयू साधन ॥ विदिरायुदास ॥ अर्घमृतिगदयनि ॥ दक्षदक्ष ॥ २
॥ अर्गानया नऊकाडं ॥ धूपघूगू ॥ विग ॥ नकवदन ॥ ऊर्जस्वांकाडं ॥ रुगुनि ॥ वाकू ॥ रुलनांसि ॥ मधिसूमधि ॥ अर्घया
गसिजलया ॥ दीयकाडं ॥ पकाविकं ॥ अर्घपूल ॥ गदयनि ॥ थूसा ॥ दक्षधूसा ॥ ३ ॥ वृधया नऊपीर ॥ धूपकंक

म. चित. गोवाचन. ऊर्जं स्वां पीत. सुगुणि धनसाधन. रुत. ममसि. मधिमथ. अर्घ्याण लूया. दीय. काविकं वीदिः
लीका. गदयगिल. अर्घलं. दक्षाल. ४ ॥ वृहस्पतिया. नऊ. पीत. धूप घृतमधू. चित. पंचगंध. ऊर्जं स्वां पीत.
सुगुणि. धनिवाकू. रुत. तडासि. मधिरिनि. दीय धन. वीदि. तडा. गदयगिल. अर्घ्याण लू. दक्षाल. कायनं. ॥
५ ॥ लूकया. नऊ. यु. धूप नील. दीय धन. ॥ अर्घ्याण तडासाया. वीदि. कयगुलि. गदयगिसन. ॥ दक्षाल. सन
नल. मसि. ॥ ६ ॥ लानिश्चनया. नऊ. नील. ॥ धूप गंधनस. ॥ चित. अगुलि. ॥ ऊर्जं स्वां. दाकू. सुगुणि. गुठ मांस. रुत. गुम
मसि. साममेधि. दीय सामविकं. अर्घ्याण नयागु. वीदिमा. गदयगि. कयगुसा. दक्षिण. कयगुसां. ॥ ॥ ना.
दूया. नऊ. नील. धूप. चानवाग. चित. सकतां. ऊर्जं. स्वां. दाकू. ॥ स. ॥ सुगुणि. ना. दा. रुत. क्रिनसि. ॥ ग्वलमधि. ॥ अर्घ

क
क
ड

नाडाता ॥ अर्घ्यपात्र कल ॥ वीदिचात ॥ गृहपति ॥ खन ॥ दक्षिणा ॥ वा ॥ खन ॥ ६ ॥ कुरुया ॥ नरु ॥ धूम ॥ धूप ॥ धील ॥
त कसुनि ॥ ऊर्ज ॥ खां ॥ नाता ॥ अगुति ॥ मूकसा ॥ घन ॥ रुल ॥ धाव ॥ चयना ॥ मधि ॥ दीप ॥ सकतां ॥ चिकं ॥ अर्घ्य ॥ कन ॥ अर्घ्यपात्र ॥ सीक
नया ॥ वीदि ॥ कल ॥ गृहपति ॥ धानस ॥ दक्षिणा ॥ धानसं ॥ ७ ॥ अरुमया ॥ नरु ॥ धूप ॥ धूप ॥ धील ॥ धील ॥ धील ॥
कुरुया ॥ अगुति ॥ दूध ॥ रुल ॥ चाकसी ॥ मधि ॥ शाय ॥ सामल ॥ अरु ॥ दूध ॥ घन ॥ मधि ॥ अर्घ्य ॥ मधि ॥ अर्घ्यपात्र ॥ डादाया ॥ ८
दीप ॥ शाय ॥ सामल ॥ चिकं ॥ वीदि ॥ अरु ॥ गृहपति ॥ सिंहासं ॥ दक्षिणां ॥ सिंहासं ॥ १० ॥ अर्घ्य ॥ नवगृहपति ॥ दूध ॥ दान ॥ विधि ॥ अरुं

॥

॥

॥

४६

वि नंदिन ययं वा वरुथवा सा वि नं सा वि नं सुखं क न न प र पा या का क न न वि उं रु व नि । ॥ उं ऊं औं हूं व क्र
हूं रु द स्वा हा ॥ छि ब्र ह्म द य ना रि दि था न जा य सर्व भा ग व का ॥ ॥ उं हूं ष य वि ष यं वा ष य वि स नं वा वो ल्यं ओ वि
स सा ख स कि स ल रु द हल ध पि व क ला स जा व वि ष डि ० क ला स हा हूं ॥ वि ष द न ह ॥ ॥ कृ श मा णी रु बि डा रि
मू ना हो ल व म्य क व रा क च व मू र्कं व सर्वा ष धी क सू या न ॥ ॥ उं यूं लूं हूं ॥ अ ह स्त म कु ल अ ष ष ज्ञा य य स ग रु
नि क्रिय रु उ चा ट नं रु व नि रु रु क हं ॥ ॥ उं न मा का म द वा य व णा क णी सा रा गं म थिं द ष थि म न मा रु नी अ म
कं रु

५१

आध्यात्मिक	
३१४	

ASIA ARCHIVES